होता है । दवा की तौर पर इस का इस्तेमाल डाक्टरी में बहुत होता है ।

Mosaic Gold (मोज़ेक गोल्ड)—बनावटी सोना, ब्रोंज पौडर, सुनहरी बुकनी । ताम्बे और जस्ते के मेल से तयार होता है ।

सुनहरी बुकनी को Aurum Musioum or mosaic Gold भी कहते हैं । एक घरिया में गंधक और सपेदा (White Oxide of lead) समभाग लेकर तेज़ आंच में गलाओ कांच या मिट्टी से पुते हुए बौशुने से खूब चलाते रहो (याद रहे कि लोहे का बौगुना न हो) यहां तक कि सफ़ूफ़ सा हो जाय ।

(२) रांगा, पारा, गंधक और साल अमोनिया समभाग. ले । पहिले रांगा गलावे और पारा डाल कर गंधक और साल अमोनिया के साथ रगड़ रगड़ कर हल करे । इन्हें घरिया में रख कर फिर इतनी आंच दो कि वह सुनहरा होकर चमकने लगे और धूआं देना बिलकुल बंद हो जाय ।

Morse (मार्स)—Walrus देखो ।

Mortar (मॉर्टर)—गारा । चूना, सुरखी या बालू और पानी मिलाने से बनता है । यह इमारतें बनाने के काम आता है ~~इस से~~ पत्थर, ईंटा वग़ैरा खूब जुड़े जाते हैं । यह सूख कर सख्त हो जाता है इसलिए छात वग़ैरा बनाने के काम भी आता है ।

Mother of Pearl (मदर आफ़ पर्ल)—मोती का सीप, सीप । खास क़िस्म की शंख वाली मछलियां सा मोती के घोंघे जो 'कस्तूरा' (Oysters) कहलाता हैं कचकड़े उनके कई तरह के होते हैं और सिंगापुर, फ़िलीपाइन-टापू, सैंडविच टापू और वेस्टर्न आस्ट्रेलिया में होते हैं ।

हिन्दुस्तान में सीप और शंख निकालने का काम ट्रावंकोर, टूटी-कोरम वग़ैरा में समुद्र के किनारे और मनार की खाड़ी में बहुत होता है और सिलोन व फ़ारस की खाड़ी में भी मोतियों के

साथ साथ सीप निकाली जाती हैं। टूटी कोरम से सीप बहुत चलान होती हैं।

बटन बनाने, पत्थर व काठ की आरायशी व नुमायशी चीज़ों पर जड़ने के काम के लिए सीप की बहुत मांग रहती है। सीप के जड़त का काम कोटा, भेरा, आगरा और दिल्ली में बहुत होता है लेकिन अफ़सोस के साथ लिखना पड़ता है कि सीप के बटन हालां कि बहुत ज्यादा बिकते हैं मगर इन से बटन बनाने का कारखाना हिन्दुस्तान में कहीं नहीं है।

सीप के नक़ली बटन सफ़ेद सींगों से बनाए जाते हैं। नक़ली सफ़ेद सींग के टुकड़ों को शूगर आफ़ लेड (Sugar of lead) के गाढ़े घोल में खूब उबाल कर और नमक के हलके तेज़ाब में डाल कर चमका लेते हैं। याद रहे कि कंघी वग़ैरा बनाने के लिए ऊपर लिखे मसाले में उबालने से सींग के दांते टूट जाते हैं, इस लिए नाइट्रेट आफ़ लेड (Nitrate of lead) के घोल में सीप को रात भर भिगो रक्खे फ़िर पानी में जिस में ३ फ़ी सदी शोरे का तेज़ाब मिला हो आधा घंटा तर करके साफ़ पानी से खूब धो डाले।

(२) सीप जोड़ने या चिपकाने का मसाला। १ भाग आइसिनग्लास, और २ भाग सफ़ेद सरेस को ३० भाग पानी में घोल और छानकर आंच पर गर्म करे कि उस का ६ भाग जल जाय।

(क) ३० भाग सफ़ेदा (Zinc white) को १५ भाग अलकोहल में घुला कर उस में १ भाग रूमी मस्तगी मिला ले। जब ज़रूरत हो तब गर्म कर के और हिला के काम में लावे।

(३) पालिश करना—झांवें को बारीक पीस कर पानी से धो डाले जिस में उस की मैल निकल जाय। इस से पालिश करे। फ़िर 'पुटी पौडर' और पानी से मले। सीप चमकने लगेंगी।

Mum (मम)—मम। एक खास क़िस्म की बीयर शराब जो गेहूं से तयार होती है।

Mundic (मुंडिक)—एक क़िस्म का खनिज़ पदार्थ जिस में से लोहा निकलता है। एक क़िस्म का लोहाश्म या लोह धातु-मूल।

Mungo (मंगो)—ऊन के खुचंड़े। ऊनी कपड़े की मिलों में ऊनी कपड़ा बिनने, नमदा बनाने या ऊनी कपड़ा फाड़ने में जो बहुत ही छोटे छोटे रोंएं निकलते हैं उन्हें अगरेज़ी में 'मंगो' कहते हैं। इन ऊनी फुसड़ी से घटिया क़िस्म के ऊनी कपड़े बनाए जाते है जैसे 'शोडी' [Shoddy] वग़ैरा।

Mutze Metal (मुंज़ मेटल)—मुंज़ मेटल। जस्ता मिला तांम्बे की चद्दरें। यह तांम्बे की चद्दरें जहाज़ के पेंदे में मढ़ी जाती हैं। यह धात हिन्दुस्तान में भी इंगलेंड से बहुत आती है। क्योंकि खालिस तांम्बे से यह सस्ती पड़ती है। इस में ६ भाग तांम्बा और ४ भाग जस्ते का मेल होता है। Brass देखो।

Muriate ot Mercury (म्यूरिएट आफ़ मर्क्यूरी)—Calomel देखो।

Muscatels (मुसकेटल्ज़)—अंगूर की एक क़िस्म जो फ्रांस, इटली और स्पेन में होती है। इस जाति के अंगूर सफ़ेद और काले दोनों तरह के होते हैं। यह अंगूर खुश्क कर के आबजोश की जगह खाने के लिये बहुत चलान किए जाते हैं। Vine देखो।

Muscovado (Sugar) (मुस्कोवाडो)—बे दानेदार चीनी, खांड़।

Nuscovite (मस्कोवाइट)—Mica देखो।

Musk (मुश्क)—मुश्क, कस्तूरी। यह निहायत तेज़ खुश्बूदार चीज़ है, जो एक क़िस्म के हरिन की नाभी से निकलती है। इस हरिन को कस्तूरा, रौस, मुश्क-नाभ वग़ैरा कहते हैं। यह दो से ज्यादा एक जगह नहीं पाए जाते और ऐसे ढालुएं पहाड़ों में होते हैं जहां आदमी का गुज़र नहीं हो सकता। यह हिमालय पहाड़ में गिलगिट से पच्छीम और शिकिम से पूरब के पहाड़ों में पाया जाता है और तिब्बत में भी होता है। एक जानवर की नाभी में से लगभग २½ तोला मुश्क निकलती है। कस्तूरी निकालने के लिए पहाड़ी लोग उसे जाल में

फंसाते हैं या उस का शिकार करते हैं। उमदा नाफ़े (नाभी) की क़ीमत उस देश में १० रु० से १५ रु० तक होती है। पहाड़ से नीचे आकर कस्तूरी की क़ीमत ३२ रु० से ४० रु० तक बढ़ जाती है। कस्तूरी ३ तरह की तिजारत में गिनी जाती है। [१] 'रशियन' या 'कबरडीन की मुश्क' [२] 'आसाम की मुश्क'—यही ज्यादातर हिन्दुस्तान मे आती है और [३] 'चीन की मुश्क'। आसाम और तिब्बत की मुश्क कलकत्ते से बिलायत जाया करती है। कस्तूरी जब तक नाभी से नहीं निकाली जाती वह नाफ़ा कहाती है और नाफ़े से निकली हुई कस्तूरी 'कस्तूरी दाना' कहाती है। भूटान से लगभग १५,००० रु० की कस्तूरी हर साल आती है लेकिन तिब्बत से कभी कम आती है और कभी ज्यादा याने कभी लगभग ४,००० रु० की और कभी १,२७,००० रु० की आती है। तिब्बत वाली कस्तूरी का दाम ज्यादा होता है। हिन्दुस्तान में कस्तूरी ११,००० रु० से ४,००० रु० तक की विदेशों में हर साल रवाना हुआ करती है। सन १९०९-१० में तिब्बत से २५,१३६ रु० की मुश्क हिन्दुस्तान में आई।

इस जगह इतनी बात और भी लिख देना उचित मालूम होता है कि कभी कभी एक क़िस्म के छुछुन्दर से भी 'नक़ली कस्तूरी' निकलती है ऐसे छुछुन्दर को अंगरेज़ी मे (Musk-rat) कहते हैं। यह जानवर बड़े न्यूले की तरह के होते हैं। दूसरी चीज़ जिस में कस्तूरी की सी महक रहती है वह 'लता कस्तूरी' है, गोकि इस पेड़ की काश्त से तिजारती फ़ायदा उतना नहीं होता। तीसरी तरह की कस्तूरी जरमनी में कोल टार [Coal tar] से तयार की जाती है।

Muslin (मुस्लिन)—मलमल, तनज़ेब, आबरवां। ढाके की बारीक मलमलें तमाम दुनियां मे मशहूर थीं। अब भी हिंदुस्तान में कई जगह बारीक मलमलें तयार होती हैं जैसे चंदेरी, कोटा, बनारस, अरनी, रोहतक वग़ैरा। अब तो आबरवां वग़ैरा बारीक कपड़े मैंचेस्टर और उस के गिर्द के ज़िलों से तयार होकर तमाम दुनियां में जाते हैं।

बेलबुटेदार मलमलें जामदानी कहाती हैं, यह ढाका, शान्तीपुर, चिटगांव, टांडा, और चंदेरी में अच्छी अच्छी बिना जाती है। सब

से उमदा बिलायती जामदानी सैंट क्वेंटिन (St. Quentin—France) फ्रांस के एक मुक़ाम की मशहूर हैं।

Must (मस्ट)—अंगूर का रस। Wine देखो।

Mustard (मस्टर्ड)—राई, सरसों, तोरिया या लुटनी, तारामीरा। यह सब जिन्सें इस शब्द में शामिल हैं मगर यह शब्द खास करके राई के लिए ज्यादा इस्तेमाल होता है। इस जिन्स की तीन क़िस्में हैं:-

(१) राई (Indian mustard)—यह खास करके बंगाल में बहुत बोई जाती है।

(२) तारामीरा, तारामोनी, उसन (Rocket)—बहुत जगह यह राई की जगह बोआ जाता है और सरसों की जगह इसका व्यापार होता है।

(३) सरसों, तोरी, लुटनी (Indian Colza or mustard) असल में यह 'रेप-सीड' (Rape-seed) कहाती है मगर ऊपर लिखी तीनों जिन्स को 'मस्टर्ड' (Mustard) और 'रेप' (Rape) कहते हैं।

(४) चौथी क़िस्म और भी इस लफ़्ज में शामिल है जिसे हिन्दी में पहाड़ी राई, पसाई (Cabbage-leaved Mustard) कहते हैं। गो कि यह सब जुदी जुदी चीज़ें हैं मगर व्यापार में जब यह अंगरेज़ी शब्द इन सब के लिये इस्तेमाल होता है।

इनकी चलान हिन्दुस्तान से लाखों रुपए की हर साल होती है। इनकी काश्त हिन्दुस्तान में सन १९०७-८ में ३२९७४५५ एकड़ और १९०९-१० में ३८८७,१२२ एकड़ में थी। सरसों व राई की चालान १९०४-५ में ६१९०००) की १९०५-६ में ८२५०००) की १९०६-७ में ५६५००० रु० की हुई थी।

तारमीरा वग़ैरा की चालान ज्यादा होती है सन १९०४-५ में २७३३८००० रु०, १९०६-७ में २४६७१००० रु० की रवाना हुई।

इन सब चीज़ों की चालान सन १९०७-८ में ५३४००० हंड० मालियती ४,३२,५६,००० रु० की, सन १९०८-९ में २७६६०००. हंड० मालियती

२,३६,९३,००० रु० की और सन १९०९-१० में ६६,२९,००० हंड० मालियती ४,६८,३२,००० रु० की हुई। यह सबसे ज्यादा बम्बई से जाती हैं।

इनके तेल भी बहुत रवाने होते हैं हालांकि तेल पेरने के उतने कारखाने यहां नहीं हैं जितने कि होने चाहिएं, सन् १९०४-५ में ५५८७६२ रु०, सन १९०६-७ में ४९०८९३ रु० का तेल भेजा गया। कलकत्ते से खास करके ज्यादा जाता है। इसका तेल कड़ुआ तेल कहलाता है।

Myall wood (मॉयल उड)—यह बबूल की जाति का एक दरख्त आस्ट्रेलिया में पाया जाता है। इसकी लकड़ी में से एक प्रकार की उमदा खुश्बू निकलती है। इस लकड़ी से मूठ वग़ैरा बनाए जाते हैं।

Myrobalans (मांइरोबेलेंस)—त्रिफला, हड़। हड़, बहेड़ा व आंवला के फल को कहते हैं। यह शब्द ज्यादातर हड़ के लिये इस्तेमाल होता है। इन से तेल निकाला जाता है जो बालों के लिये बहुत मुफ़ीद है। इनका बहुत ज्यादा इस्तेमाल 'कसाव' निकालने के लिए होता है जिस से चमड़ा तयार किया जाता है, छींट छापने और स्याही बनाने में भी इन का काम पड़ता हैं।

खास तौर से यह लफ़्ज़ हड़ के लिये इस्तेमाल होता है मगर आम तौर पर हड़, बहेड़ा व आंवला के माने में आता है। हड़ को Chebulic या Black Myrobalan, बहेड़े को Beleric Myrobalan और आंवले को Embelic Myrobalan कहते हैं।

हड़ के पेड़ की लकड़ी मज़बूत और पालिश लायक़ अच्छी होती है जिस से सामान बनाये जाते हैं। फिटकरी के साथ हड़ से रंगने पर पका ज़र्द रंग रंगा जाता है। तिजारत में ५ तरह के हड़ गिने जाते हैं (१) भिमली, (२) राजपुरी, (३) जबलपुरी, (४) विंगोरला (मद्रास) और (५) बम्बैया।

इसकी गोंद बेरार में बटोरी जाती है और दूसरी गोंद में मिलाकर बिकती है। हड़ दस्तावर दवा है।

मध्य प्रदेश, बेरार, राजपुताना, बंगाल व मद्रास के सूबों में बहुतायत से होती है और यह विलायत बहुत जाती है। सन १९०५-६ में

४४६०६७६ रु० का सन १९०६-७ में ४३९७५९१ रु० का रवाना हुआ।

१९०७-८	में	५८९५२४६ रु०	की	१४९३२९४	हंडरवेट
१९०८-९	में	५७२०३०२ रु०	की	१४६६८४०	„
१९०९-१०	में	६०००४१३ रु०	की	१४६७१०४	„

Myrrh (मिर्ह)—बिलसान, बोल। यह एक क्रिसिम की गुगुल हैं जो अरब और अबीसीनिया में होती हैं। यह अरब देश से बम्बई में बहुत आती है। सबसे उमदा क्रिस्म 'करम' या 'बंदर करम' कहाती है और दूसरी क्रिस्म को 'मीटिया' या 'चेनाई-बोल' कहते हैं।

Myrtle wax (मिर्टल व्याक्स)—यह एक क्रिस्म की मोम है जो Myrica Cerifera नाम के पेड़ के फल को पानी के साथ उबालने पर निकल आती है। सौथ अमेरिका और अमेरिका के पच्छिमी देशों में इसकी तिजारत बहुत होती है। इस मोम की मोमबत्ती बनती है।

N.

Nails (नेल्ज़)—कील, कांटा, कटिया, परेख। बढ़ई वग़ैरा इसे दो चीज़ों को एक में जड़ने के काम में लाते हैं। लोहे की परेखें 'बरमिंघम और डडली (Birmingham and Dudley) से बन कर हिन्दुस्तान में बहुत आती हैं। जरमनी और बेलजियम देश से खास करके ज्यादा आती हैं। सन १९०९-१० में इन की आमदनी १५९७४ टन हुई।

Nankeen (न्यान्कीन्)—एक क़िस्म का ज़र्द रंग का कपड़ा जो पहिले चीन में तयार होता था मगर अब यह योरोप में भी तयार होने लगा है।

Naphtha (न्यफ़्था) - नपत, नफ़ता, नफ़्था, काला सलाजित। मट्टी के तेल में से यह निकाला जाता है। पेश्तर यह नाम 'काली शिलाजीत' के क़िस्म की एक चीज़ का था मगर अब यह नाम एक ऐसे पदार्थ का है जो मट्टी के तेल या कोल-टार में से चुआने पर निकलता है और वह बल नहीं सकता। यह ज़मीन में से खोद कर निकाला जाता है। यह पेट्रोलियम या मिनरल आयल का भी नाम है।

अब यही चीज़ कई चीज़ों को भबके द्वारा चुआ कर निकाली जाने लगी है जैसे रबड़, हड्डी, लकड़ियां वग़ैरा से। यद्यपि उक्त चीज़ों में से निकले पदार्थ एक नहीं हैं तौ भी उन की गिनती 'नफ़्था' के ही अन्तरगत है। नफ़्था बड़े काम का पदार्थ है और हुनर के बहुत कामों में इस का इस्तेमाल होता है। बेनज़ोलीन (Benzoline) भी एक प्रकार का नफ़्था है। जो चीज़ें या राल पानी में नहीं घुलतीं वह नफ़्था में घुल जाती हैं इस लिए इस की मांग व ज़रूरत बहुत रहती है। Petroleum देखो।

Naples yellow (नेपल्ज़ यलो)—यह एक क़िस्म का ज़र्द रंग है जो रंगीन तस्वीर या रंग रौग़न करने या मीनाकारी के काम आता है। यह क़ीमती और क़द्र की चीज़ है।

(१) अण्टिमनी (Metallic antimony) पिसा हुआ ३ भाग, सफ़ेदा [Oxide of zinc] १ भाग, सेन्दुर २ भाग मिला कर फूंका जाय फिर पीस कर एक बन्द घरिया में टिघला कर जमा लिया जाय। इस डले को महीन पीस कर खूब धो डालने से यह रंग तयार होता है।

(२) 'डायाफ़ोरेटिक अण्टिमनी' (Diaphoretic antimony) १ भाग (धोआ हुआ) और संदुर २ भाग पानी में दोनों हल कर के और एक घरिया में रख कर तेज़ लाल अंगारे की आंच ४ या ५ घण्टा देने से यह तयार होता है।

Natron (नेट्रन)—यह एक क़िस्म की सज्जी मट्टी है जो इजिप्ट देश के झीलों में पाई जाती है।

Neats-foot Oil (नीटस-फुट-आयल)—यह एक क़िस्म का तेल है जो भैंसों के खुरों से निकाला जाता है। सौथ अमेरिका में इस के तयार करने का कारोबार बहुत होता है। चमड़ा मुलायम करने के काम मे यह बहुत इस्तेमाल होता है।

Needles (नीडिल्ज़)—सुइयां, सूए, सलाई। कपड़े वग़ैरा सीने का यह मशहूर औज़ार है। यह कई नम्बर की छोटी, बड़ी, बारीक व मोटी तयार की जाती हैं। इन का एक सिरा नोकीला दूसरा नकेदार [याने जिस में सूराख़ हो] होता है। पेश्तर सुइयां हिन्दुस्तान ही में ज्यादा बना करती थीं और यहीं के एक कारीगर ने विलायत जाकर एक अंगरेज़ की शिराकत में काम शुरू किया। इस के बाद इस कारोबार में वहां इतनी तरक्की हुई कि अब कुल सूई विलायत से ही हिन्दुस्तान में आती हैं। इस का कारोबार मुक़ाम 'रेडिच' (Redditch) [Birmingham] में ज्यादा है। कपड़े सीने के लिए सुइयां इस्तेमाल होती हैं और यह कई तरह की बारीक व मोटी होती हैं। टाट वग़ैरा मोटी चीज़ों के सीने के लिये जो बड़ी सुइयां काम में लाई जाती हैं वे सूए कहाते हैं और जो मोज़े, गुलबन्द वग़ैरा बुनने के लिए छोटी या बड़ी सुइयां इस्तेमाल होती हैं उन्हें सलाई कहते हैं।

Nephrites (नेफ्राइट)—संगे यशब। यह कई क़िसिम का कम क़ीमती पत्थर होता है। तुरकिस्तान और साइबीरिया में बहुत पाया जाता है। बर्म्हा में भी कई जगह मिलता है। ज़िला मिरज़ापुर के दक्खिन पहाड़ में इसी जाति का एक संग निकलता है। इस नग की क़दर चीन और जापन में ज्यादा है। हाल में कोलम्बिया और न्यूज़ीलैंड में इस की खान मिली है।

Nerole Oil (नीरोल आयल)—निरौली का तेल। नारंगी के फूलों से भबके द्वारा यह तेल टपका कर निकाला जाता है। यू-डी-कलोन नामक विलायती खुश्बू का यह ख़ास जुज़ है। यह और भी कई खुश्बूदार चीज़ों में मिलाया जाता है। इस के निकालने का कारोबार इटली में बहुत होता है।

Newzealand Hemp (न्यूज़ीलैंड हेम्प)—न्यूज़ीलैंड का सन। न्यूज़ीलैंड में एक पौधा Phormium tenax होता है उस के रेशे का यह तिजारती नाम है। मनीला हेम्प का भाव बढ़ जाने से इस का इस्तेमाल ज्यादा होने लगा है।

Nicaragua wood (निकारागुआ उड)—यह एक क़िस्म के पेड़ की लकड़ी है जिस का नाम Cæsalpinia Echinata है यह पेड़ सेंट्रल अमेरिका में बहुत होता है। जिस तरह हिन्दुस्तान में 'पतंग' या 'बक्कम' की लकड़ी से रंग निकाला जाता है उसी तरह इस की लकड़ी से भी लाल स्याह रंग निकलता है। इसे 'पीच उड' [Peachwood] भी कहते हैं।

Nickel (निकिल)—निकिल धातु। यह एक प्रकार की भूरी-सफ़ेद रंग की धात है। इसी की इकन्नी अब हिन्दुस्तान में चल रही है। इस के बरतन वग़ैरा भी बनते हैं। यह धातु अलग नहीं मिलती। जिस खनिज पदार्थ में यह ज्यादा पाई जाती है उस का नाम 'निकिली-तम्बा' (Kupper-nickel) है और वह देखने में भी ताम्बे की तरह का होता है मगर उस में संखिया और निकिल का ही मेल ज्यादा रहता है। यह धात जरमनी, हंगेरी, फ्रांस और युनाइटेड स्टेट

में पाई जाती है। संखिया पृथक कर लेने के लिए जब उस का धातु-मूल गलाया जाता है तब उस में की मैल, जिसे 'स्पीस' [Speiss] कहते हैं निकल आती है और इसी मैल में से निकिल धात निकाली जाती है। जरमन-सिलवर बनाने में इस का मेल बहुत दिया जाता है जैसे ५० भाग ताम्बा, ३० भाग जस्ता और २० भाग निकिल मिलाने से जर्मन सिलवर बनता है। जब सिर में दर्द होता है तब 'सलफ़ेट आफ़ निक्ल' [Sulphate of nickel] से फ़ायदा पहुंचता है।

Nitrate of Soda (नाइट्रेट आफ़ सोडा)—Nitre देखो।

Nitrates (नाइट्रेट्स)—Nitric Acid देखो।

Nitre (नाइटर)—शोरा। इसे 'साल्ट पीटर' (Saltpetre) या 'नाइट्रेट आफ़ पोटाश' (Nitrate of Potash) भी कहते हैं। यह एक क़िस्म की खार है जो खारी मिट्टी में से निकाली जाती है। सूबा बिहार के ज़िला गया, सारन, तिरहुत और चम्पारन में यह बहुत निकाला और बनाया जाता है। संयुक्त प्रान्त में ज़िला कानपूर, इलाहाबाद, ग़ाज़ीपुर और बनारस में भी शोरा बनता है। सूबा, पंजाब, सेंट्रल इंडिया वग़ैरा में भी इस के गोदाम हैं। फ्रांस में रद्दी खालों से शोरा निकाला जाता है। अब ज्यादातर शोरा चिली देश की एक मिट्टी से, जो 'नाइट्रेट आफ़ सोडा' (Nitrate of Soda) कहाती है, बनता है।

बारूद बनाने में शोरा बहुत इस्तेमाल होता है शोरे का तेज़ाब भी बनता है और भी कई काम आता है। चिली देश के शोरे को 'क्यूबिक नाइटर' (Cubic Nitre) या 'नाइट्रेट आफ़ सोडा' (Nitrate of Soda) कहते हैं। लेकिन बारूद बनाने के काम का वह नहीं होता बलके खाद के लिए वह उमदा चीज़ है।

हिन्दुस्तान का शोरा बारूद बनाने के काम आता है इसी वजह से इस की तिजारत अब तक कुछ क़ायम है। पेशतर शोरा बनाने के बहुत कारखाने हिन्दुस्तान में कई जगहों में थे लेकिन अब बहुत

कम रह गए हैं। सन् १९०६-७ में ४१४२५२७) का ३३३३७८ हंडरवेट, सन् १९०८-९ ४५३५००० रु० का ४०००२७१ हंड० और सन् १९०९-१० में लगभग ३९१४००० रु० का ३५८२३२ हंडरवेट शोरा रवाना हुआ।

Nitre, Sweet (स्वीट नाइटर)—अलकोहल को शोरे और गंधक के तेज़ाब और ताम्बे के साथ मिला कर और भबके द्वारा टपका कर निकाला जाता है। असल में यह अलकोहल और 'नाइट्रेट आफ़ ईथिल' (Nitrate of Ethyl) है। यह दवा के काम में लाया जाता है और पसीना लाता है। इस अर्क़ का ज़ायका बड़ा तीखा और महक ईथर की सी होती है। 'नाइट्रस एसिड' (Nitrous Acid) भी इस का नाम है।

Nitric Acid (नाइट्रिक एसिड)—शोरे का तेज़ाब। इसे 'स्पिरिट' आफ़ नाइट्रिक' (Spirit of Nitric) या 'एकुआ फ़ार्टिस' (Aqua-fortis) भी कहते हैं। यह मशहूर और बहुत काम का निर्मल तेज़ाब होता है उस में कोई रंग नहीं रहता मगर बाज़ारी या घटिया तेज़ाब में ज़र्दीपन रहती है। इस तेज़ाब में लगभग सभी धातु गल जाते हैं। इस तेज़ाब में नमक का तेज़ाब मिलाने से उसमें सोना और प्लाटिनम तक गल जाता है और 'शाही तेज़ाब' (Aqua-Regia) कहाता है। शोरे का तेज़ाब बहुत से कामों में इस्तेमाल होता है। ताम्बा इस से खूब साफ़ हो जाता है। सोना निकालने या दूसरे धातों के मेल से अलग करने के लिए बड़े काम का यह तेज़ाब है। सोहागे के घोल को उबाल कर उस में इस तेज़ाब को मिला देने से सोहागे का तेज़ाब (Boracic Acid) बन जाता है और ठंडा करने पर इस की क़लमें जम जाती हैं।

इस तेज़ाब से कई बहुत काम के खार बनते हैं जैसे:—

(१) 'नाइट्रेट आफ़ सिलवर' (Nitrate of Silver)—इसे 'ल्यूनर कास्टिक' (Lunar Caustic) भी कहते हैं। यह तीन तरह का बाज़ार में मिलता है।

(१) पतली पतली निर्मल पत्तियां (२) मट्ठल पत्तियां (३) क़लमें (सफ़ेद या भूरे टुर्रे)। खालिस चांदी को शोरे के तेज़ाब (४० Baume बाम) में डालने से चांदी उस में घुल कर गल जाती है। कुछ देर बाद नीचे गाद की तरह क़लमें जम जाती हैं यही 'नाइट्रेट आफ़ सिलवर' है जो निकाल कर धो ली जाती है। इसे नीले या काले रंग के बोतल में रखना चाहिए।

[२] 'नाइट्रेट आफ़ बाइनाक्ज़ाइड आफ़ मर्क्यूरी' [Nitrate of Binoxide of mercury]—शोरा के तेज़ाब में पारा मिलाने से बनता है २१२ डिगरी की आंच दी जाती है जब ज़र्द धुआं उठना बंद हो जाता है तब उतार के गाद जमने देते हैं।

[३] Nitrate of Potash [नाइट्रेट आफ़ पोटाश] या साल्ट पीटर (Saltpetre] याने शोरा।

Nitro-Benzine [नाइट्रो बेन्ज़ाइन)—Alizarine देखो।

Nitro-Glycerine (नाइट्रो-ग्लिसरीन)—ग्लीसरीन को सम्भाग गंधक और शोरे के तेज़ाब में घोलकर पानी में डालने से यह दवा गाद की तरह नीचे बैठ जाती है। यह बड़ी भयंकर चीज़ है। ज़रा सी धमक या चोट पाकर यह भभक उठती है। लेकिन धीमी आंच पर डालने से वह गलकर बल उठती है .मगर भभकती नहीं। इसको बनाने या रखने के लिये लाइसंस लेना पड़ता है।

Nitrous Ether (नाइट्रस ईथर)—Nitre, Sweet देखो।

Nut-gall (नट गाल्ज़)—Galls देखो।

Nutmeg (नट-म्यग)—जायफल। इसका पेड़ हिन्दुस्तान में कम होता है मगर कोनूर की पहाड़ी (मद्रास) में और बरलियार के बोटानिकल गार्डन में इसके पेड़ हैं। यह पेड़ मोलक्का, जावा द्वीप वग़ैरा में बहुत होता है। यह अखरोट की तरह का गोल फल होता है। यह खुश्बूदार दवा और गर्म मसाले की चीज़ है। इसी के छिलके में से जावित्री निकलती है। इस में से तेल भी निकाला जाता है जो

जायफल का तेल (Nutmeg butter) कहाता है। भभके में चुआ कर तेल निकाला जाता है।

सन १९०६-७ में २२८४५३ रु० की जायफल ९९३७५ मन हिन्दुस्तान में आया।

Nux vomika (नक्स वमिका)—कुचला। कुंचले का पेड़ गोरखपुर के जंगल में, बंगाल, ओड़ीसा, करनाटक, बम्बई और बर्म्हा के जंगलों में होता है। इस का फल छोटी नारंगी की तरह का होता है, इसी का बीया 'कुचला' कहाता है जो खाने में बड़ा कड़ुवा होता है। यह बीया बाहर बहुत जाता है। इन में से दो तरह की खार 'अलकलायड' (alkaloide) निकलती है (१) 'स्ट्रिकनाइन' (Strychnine) और (२) 'ब्रूसाइन' (Brucine) इन में से रंग भी निकलता है जिस से रूई या सूत पर हलका बादामी रंग चढ़ आता है और तेल भी निकाला जाता है जिसे वैद्य लोग बरतते हैं। यह नशीली चीज़ है।

O.

Oak (ओक)—ओक, ज़ीतून। यह कई क़िस्म का पेड़ हिन्दुस्तान में होता है [१] किलौंज, मोरू, तिलंगसा, (Quercus dilatata or Green Oak of the Himalaya) [२] बंज, करश्रू, (Q. incania or Grey Oak) [३] शलशी (Q. lanellosa) [४] माज़ू, माज़ूफल, (Q. lusitanica or Gall or Dyer's Oak] [५] घेसा, करश्रू, (Q. Semecarpifolia or Common Brown Oak)। इन की लकड़ी निहायत मज़बूत होती है और छाल से कसाव निकाला जाता है।

इन के अलावा कौसुम या गौसम को भी Ceylone Oak कहते हैं मगर इस की लकड़ी की उतनी क़दर नहीं है।

[१] इस लकड़ी के लिए सुस्ती बारनिश—साफ़ ज़र्द राल $3\frac{1}{2}$ रतल लेकर १ गेलन ताड़पीन के तेल में घोले और अगर ज्यादा स्याहीपन लाना हो तो ज़रा सा काजल का मेल दे दे।

Oakum (ओकम्)—पुरानी रस्सी या रस्सों के लड़ खोल कर, आपुस में रगड़ने से जो फ़ुज़ले या फुसड़े निकलते हैं वह नावें या जहाज़ों के दरार में भरने के काम आते हैं, इसी को 'ओकम' कहते हैं। यह काम ज्यादातर क़ैदियों से लिया जाता है।

Oatmeal (ओटमील)—जई का आटा। जई को पहिले भाड़ में भून कर दरते हैं जिस से उस का छिलका दूर हो जाता है बाद को वह पीसी जाती है। इस की रोटियां स्काच लोग बड़ी चाव के साथ खाते हैं। जई का आटा विदेशों से थोड़ा बहुत आता रहता है, खास कर के उन जहाज़ों पर जिन पर घोड़े लाये जाते हैं। सन १९०६-७ में यह लगभग $2\frac{1}{4}$ लाख रुपए का आया था।

Oate (ओट)—जई। यह ४० से ज्यादा क़िस्म की होती है मगर हिन्दुस्तान में १४ क़िस्मि की बोई जाती है। दिल्ली, हिसार और

मेरट की तरफ़ ज्यादा बोई जाती है और सूबों में भी थोड़ी बहुत बोई जाती है। हिन्दुस्तान में यह घोड़ों को खिलाई जाती है। इंगलैंड में इस की खेती गेहूं से भी ज्यादा होती है। घोड़ों के लिए अच्छी खुराक है और मनुष्य भी इसे खाते हैं। स्काच क़ौम के लोग इस की रोटियां बड़े चाव से खाते हैं।

Ochre (ऑकेर)—गेरू। यह ज़र्दी मायल और गुलाबी रंग का होता है। यह एक क़िस्म की रंगीन मिट्टी है जिस में मट्टी, रेत, अलूमिना और कई दग्ध धात मिले रहते हैं। एक क़िस्म का गेरू और भी होता है जिस में दग्ध लोह के सिवाय मैंगनीज़ भी मिला रहता है इसे ambre भी कहते हैं जो हिन्दुस्तानी भाषा में 'कहरोंबा' कहाता है इस। की खान अपर बर्म्हा में है, योरोप में इसे तेल में उबाल कर पारदर्शक और मुलायम कर लेते हैं, फिर इन के दाने, मुहनाल वग़ैरा बनाते हैं। गेरू का इस्तेमाल रंगसाज़ी के काम में बहुत होता है।

ज़र्दी मायल गेरू को आग में पका लेने से उस में सुर्ख़ी आ जाती है तब इसे 'आरंज ओकर' [Orange Ochre] कहते हैं और खालिस 'भूरा गेरू' [Brown ochre] पकाने पर बहुत सुर्ख रंग देता है। बनावटी गेरू भी बनता है मगर असली गेरू इतना ज्यादा मिलता है कि नक़ली बनाने की ज़रूरत कम पड़ती है। Brown ochre और Spruce ochre एक ही चीज़ है मगर Spanish ochre गो कि एक क़िस्म का गेरू है लेकिन वह दूसरी चीज़ है। यह ज़र्द गेरू [Yellow ochre] आंच में पकाया हुआ होता है।

Oil-Cakes (ऑयल-केक्स)—खली। तेलहन की जिन्सों में से तेल निकालने के बाद जो खुद रह जाता है और चिपक कर भेली बन जाता है उसे खली कहते हैं, जैसे सरसों की खली, तिल की खली, तिल्ली की खली, बिनौले की खली। खली गाय, बैल, भेंड़ वग़ैरा को खिलाई जाती है और इस की खाद निहायत उमदा होती है।

हिन्दुस्तान से खली भी बहुत बाहर चलान की जाती है सन १९०८-९ में ८९.६४ लाख रुपये की और सन १९०९-१० में ८३ लाख

रुपए की रवाना हुई यह खाद के लिये और मवेशियों को खिलाने के लिये जाया करती है।

Oils (आयल्ज़)—तेल। जितने चिकनाहटदार तरल पदार्थ हैं उनको तेल कहते हैं। तेल ३ तरह के होते हैं (१) जौहर या स्थाई तेल (Fixed oil) (२) रूह या उड़ने वाला तेल (Essential oil or Volatile oil) और (३) खनिज तेल (Mineral oils)। जौहर या स्थाई तेल निकालने में उस वस्तु का जिसमें से कि तेल निकलता है, बिघटन करने अर्थात् उसके तत्वों को विभिन्न करने का प्रयोग करना आवश्यक होता है। क्योंकि बिना इसके यह तेल निकल ही नहीं सकता। यह तेल बालने पर बलता है, उसमें चिकनाहट होती है और कागज़ पर उसका दाग़ पड़ जाता है। तेल प्रायः तीन क़िस्म की चीज़ों से निकाला जाता है।

(१) एक वह जो जीव जन्तु पशु इत्यादि से निकलता है।

(२) दूसरा उद्भिज अर्थात् बृक्ष, फल वग़ैरा से निकलाता है।

(३) तीसरा खनिज तेल जो ज़मीन के अन्दर रहता है और खोद कर निकाला जाता है।

पहिली क़िस्म जानवरों के चरबी को गरम करके दबाने से निकल आता है और छानकर अलग कर लिया जाता है। दूसरी क़िस्म का तेल बीयों को कोल्हू के भारी दाब में पेर कर निकालते हैं। इन दोनों में साबुन बनने का गुण है। इन तेलों में भी दो तरह का भेद माना जाता है (क) एक वह जो जल्द सूख जाय या सरदी पाकर और जमकर ठस होजाय और (ख) दूसरा वह जो नहीं सूखे या देर में सूखे और सरदी पाकर भी नहीं जमे। सूखने वाला तेल रौग़नसाज़ी के रंग में मिलाने के काम में लाया जाता है जैसे अलसी, पोस्ता, रेंड़ी, बिनौले वग़ैरे का तेल। न सूखने वाला तेल बालने और साबुन बनाने के काम में लाया जाता है जैसे ज़ैतून, बादाम, सरसों, जंगली-अखरोट के तेल।

रूह या उड़ने वाला तेल बृक्षों की पत्तियां, छाल और उसके फल वग़ैरा को पानी में उबाल कर या चुआकर निकाला जाता है। यह

भी बलता है और काग़ज़ पर दाग़ देता है, मगर इस का दाग़ गरमी पाकर उड़ जाता है और इसमें महक भी होती है, इस क़िस्म के तेल में लौंग, नारंगी, नीबू वग़ैरा के तेल की गिनती है।

खनिज तेल मट्टी या चट्टानों में से निकलता है जैसे मट्टी का तेल, पेट्रोलियम, बेनाज़ीन वग़ैरा।

तेल का इस्तेमाल खाने, बदन में लगाने, मशीनों में चुपड़ने, रौग़न साज़ी, साबून बनाने, मोमबती बनाने वग़ैरा और भी बहुत से कामों में होता है। हिन्दुस्तान में तेल कई चीज़ों के पेरे जाते हैं जैसे मूंगफली, महुआ, सरसों या तोरी (जो कडुआ तेल कहाता है) अलसी, भांग, कुसुम के बीज या कड़, नारियल, गरजन, कोकम या भिरंड, अलसी, बादाम, अखरोट, शाजना, पोस्ता, रेंडी, तिल, बिनौला, नीब, मक्खन, घी, चरबी, मछली, मोम वग़ैरा।

मोमबती व साबुन बनाने व लुब्रीकेंट तयार करने के काम के तेल यह हैं:—

मूंगफली (Arachis Oil or Ground Nut Oil), महुआ का तेल (Mahua Oil or Butter), जंगली अखरोट का तेल (Candle nut oil), तिल की तेल (Benne oil or Gingelly Oil), पाम आयल (Palm-nut oil), सरसों या लुटनी या तारामीरा का तेल याने कडुआ तेल (Rape or Colza Oil), रेंडी का तेल (Castor Oil), नारियल का तेल (Cocoanut Oil), गरी की तेल (Copra Oil), बिनौले का तेल (Cotton-seed oil), मछली के तेल (Fish Oil) अलसी या तीसी का तेल याने मीठा तेल (Linseed Oil), राम तिल या करसनी का तेल (Niger or Ram-til Oil), सूअर की चरबी (Lard), जैतून का तेल (Olive Oil), सूरजमुखी के बीज का तेल (Sunflower-seed oil), डिका तेल (Dika oil) यह अफ़रिका देश में निकाला जाता है, चरबी (Tallow)।

खुश्बूदार तेल—ज़ीरे का तेल, धनिया का तेल, सौंफ़ का तेल (Aniseed Oil), सोआ का तेल (Dill Oil), कपूर का तेल (Camphor Oil), लन बटू या पंगीरी का तेल (Citronella

Oil), लवंग का तेल (Clove Oil), नींबू का तेल (Lemon Oil), निमारी का तेल (Nimar Oil), रौसा का तेल (Rusa Oil), पचौली का तेल (Patchauli Oil) ।

इत्र—कुलंजुन, धूप, रसमाला, अगर, दालचीनी, लवंग, नींबू, अरूसा, मोतिया, जूही; चम्बेली, चम्पा, मौलसरी, हेना, गुलाब, केवड़ा, जटामासी, बालूछड़, पचौली, संदल, कुट, खस (Vetiver), बेल का इत्र (Mermelle Oil), चन्दन का इत्र या रौग़न सन्दल ।

खाने के काम का तेल—ज़ीतून का तेल, मूंगफली का तेल, पोस्ते का तेल, तिल का तेल, बिनौले का तेल, बादाम रौगन, गरी का तेल, कुसुम्ब या कड़ का तेल, पोस्ते का तेल ।

दवा के काम का तेल—दिक (काजू का तेल=Cashew nut oil) चौलमुगरा का तेल (Chaulmugra oil), रेंडी का तेल (Castor oil), काडलिवर तेल (Cod-liver oil), पिन्ने का तेल (Pinnay or Domba oil), खवी या इज़ख़िर का तेल (Ginger grass oil), भिरंड का तेल (Mangosteen oil or Kokum butter) ।

चिराग़ जलाने के तेल—सरसों का तेल, बिनौले का तेल, महुआ का तेल, नारियल का तेल, अलसी का तेल, गौसम का तेल (Macassar oil), रेंडी का तेल, कुसुम का तेल, पट्टी का तेल इत्यादि ।

कलों में चुपड़ने या उनके चिकनाने के तेल—सरसों, राई, भंग के बीज व खजूर के तेल, मिनरल आयल ।

रौग़न साज़ी के तेल—इन में सब से उमदा अलसी का तेल है । अलसी के तेल में गंधक का संयोग करने से जो चीज़ बनती हैं उसे (Linoleum) कहते हैं और रबड़ या गटापरचा के तयार करने के काम आता है और कई तरह के रंग के साथ मिला कर कपड़े पर चुपड़ देने से मोमजामा (Wax cloth) बनता है ।

इस के अलावा तुंग का तेल (Tung or Chinese wood oil), गरजन का तेल (Garjan oil), तेलिया गर्जन का तेल, कोकन का तेल (Malabar wood oil) ।

जन्तु के तेल—काडलिवर आयल, स्पर्म आयल, ट्रेन आयल, (Train oil) इत्यादि। Tallow देखो।

Oil of Vitriol (ऑयल आफ़ विट्रियल)—गंधक का तेज़ाब। Sulphuric acid देखो।

Oilstone (आयल स्टोन)—सिल्ली, चाकू या छुरा तेज़ करने की सिल्ली। यह कई क़िस्म के पत्थर होते हैं लेकिन सब से उमदा सिल्ली Charnley Forest, 'टर्की' (Turkey) 'अर्कनसास' (Arkansas) और 'वशीटा ब्रांड' (Washita brands) की होती है। औज़ारों की धार इन पर रगड़ कर तेज़ की जाती है। औज़ारों पर ज़ीतून का तेल, पेट्रोलियम या स्पर्म आयल लगा कर रगड़ना चाहिए।

Oleomargarine (ओलियो मार्गरीन)—Butter के ब्यान में इस के बारे का हाल पढ़ो।

Oleo Oil (ओलिओ ऑयल)—'ग्लिसरीन' (Glycerine) और 'ओलिक एसिड' (Oleic acid) को मिला कर बनता है। यूनाइटेड स्टेट मे यह बहुत तयार होकर हालंड और जरमनी में भेजा जाता है जहां पर 'मारगरिन' [Margarine] बनाने में बहुत काम आता है।

Olibanum (ओलीबेनम)—लुबान, कुन्दुर। यह अरब, अफ्रिका और सोमाली लैंड की उमदा होती है और वहाँ से बम्बई में आकर योरोप मे जाती है। कुन्दुर के पेड़ में पछना लगाने से लोबान बह आती है और जम कर उस के दाने दाने हो जाते हैं। इस का रंग हलका ज़र्द या स्याही मायल होता है। यह खुशबू के लिए जलाई जाती है, इस की धूनी मन्दिरों में या देवस्थानों में दी जाती है। हिन्दुस्तान में लगभग ४ लाख रुपए की लोबान हर साल आती है और लगभग ३ लाख रुपए की चलान होती है।

Olive (ऑलिव)—जैतून, ज़ीतून। यह ३० क़िस्म का होता है और सीरिया और योरोप के दक्खिन भाग में बहुत होता है। ज़ैतून के कच्चे फलों के अचार और मुरब्बे तयार होते हैं। इस की लकड़ी

बहुत उमदा होती है और उस की बहुत क़दर की जाती है। फलों को पेर कर तेल निकाला जाता है जो बहुत क़दर और काम की चीज़ है। इस का तेल (Olive Oil) तीन दरजों का होता है।

[१] सिरेका तेल (Virgin Oil)—फलों के गूदे को थैलों में भर कर दबाने या पेरने से निकल आता है यह सब से उमदा होता है।

(२) जीतून का मामूली तेल—सिरे का तेल निकालने के बाद जो फोक बच रहता है उसे गर्म पानी में तर कर के और फिर दबा कर तेल निकाला जाता है यह दूसरे दर्जे का है।

(३) घटिया तेल (Pyrene Oil)—इस बचे हुए फोक (marc) को भी पानी में भिगा कर पेरते हैं यह तेल तीसरे दर्जे का है। सिरे का तेल टस्कनी में तयार होता है और इटली से बहुत चलान इस तेल की होती है। Marseilles और Windsor Soaps बनाने के लिए दूसरे और तीसरे दर्जे का तेल बहुत इस्तेमाल होता है और सिरे का तेल जब खूब साफ़ कर दिया जाता है तब वही 'सालेड आयल' [Salad-oil) के नाम से बिकता है। इंगलैंड में यह लगभग ३००० टन हर साल जाता है।

Onions (आनियन्ज़)—प्याज़, लहसुन। प्याज़ दो क़िस्म का होता है एक का रंग रूप हलका सफ़ेद (प्याज़ी) और दूसरे का रंग गुलाबी लाल या ज़र्द। पटना और बम्बई के प्याज़ मशहूर और उमदा होते हैं। इसे मुसलमान लोग बहुत ज्यादा खाते हैं और कुछ हिन्दू भी खाते हैं और दुधार गाय भैंस को भी खिलाया जाता है। बम्बई से जापान और ज़ंजीबार वग़ैरा देशों में प्याज़ बहुत जाता है। लहसुन के ताज़े रस से कांच जुट जाता है। लहसुन (Garlic) भी प्याज़ ही की एक क़िस्म है। इस की पुत्तियां छोटी लौंग की तरह होती हैं। मद्रास वग़ैरा में बहुत बोआ जाता है बल्कि सभी जगह थोड़ा बहुत बोआ जाता है।

लहसुन के ताज़े रस से कांच जुट जाता है।

Opal (ओपल)—ओपल। यह एक प्रकार का क़ीमती संग या रत्न है। इस की बनावट में रेत का भाग ज्यादा रहता है और अलूमिना और लोह मंडूर या दग्ध लोह भी रहता है इस की चमक में चिकनापन झलकता है। यह रत्न सफ़ेद से सुर्खी मायल रंग तक का होता है, भूरा और सब्ज़ी मायल भी होता है। इस रत्न की भी कई क़िस्म है इस रत्न में धूपछांह (Opalescence) की सी चमक व आभा रहती है। अंगूठी वग़ैरा में बतौर नग के जड़ा जाता है। हंगरी में बहुत उमदा क़िस्म का नग मिलता है सैक्सनी, क्वींज़लैंड और सौथ अमेरिका में भी अच्छे नग निकलते हैं।

Opium (ओपिअम)—अफ़ीम, अफ्यूं, अहिफ़ेन। यह बड़े काम की दवा है। पोस्ते की खेती हिन्दुस्तान, चीन, टरकी और फ़ारस में होती है। हिन्दुस्तान की अफ़ीम चीन को बहुत जाती है और फ़ारस और टरकी में भी भेजी जाती है। अफ़ीम बोने के लिये गवरमेंट से लाइसंस लेना पड़ता है और अफ़ीम काछ कर गवरमेंट ही के हाथ एक बंधे निर्ख पर बेच देना पड़ता है, दूसरे के हाथ बेचने से सज़ा होती है। नशे के लिये इसे लोग खाते हैं और बतौर दवा के इस का इस्तेमाल बहुत होता है। पटना और बनारस में इस की काश्त ज्यादा होती है। देशी रियासत में केवल मालवा की तरफ़ बोई जाती है। रियास्ती अफ़ीम जब सरकारी राज्य में लाई जाती है तो उस पर भारी महसूल लगता है।

बनारस और बिहार की एजंसियों में लगभग साढ़े तीन या पौने चार लाख एकड़ में इस की काश्त है। सन १९०८ में ४६८०० संदूक़ और सन १९०९ में ४३२००, सन १९१० में ३९६०० और सन १९११ में ३१४४० संदूक नीलाम हुये। अब अफ़ीम की चालान कम की जाया करेगी। बंगाल व बम्बई से इस की चालान का व्योरा:—

१९०७-८	८,६७,२५,०००	रु० की
१९०८-९	९,३४,९२,०००	” ”
१९०९-१०	९,२१,१६,०००	” ”

Opium wax (ओपिअम व्याक्स)—अफ़ीम की मोम, पोस्ते की मोम।

Opopanax (ओपोपेन्याक्स)—एक क़िस्म की गुगुल सरीखी राल है जो सदर्न योरोप और पर्शिया में पैदा होती है।

Opossum (ओपोसम)—यह एक क़िस्म का जानवर है कि जिस के पेट के आगे बच्चे को रखने या ले जाने की थैली होती है। इस की पोस्तीन दस्तानें वग़ैरा बनाने के लिए बहुत चलान होती रहती है।

Orange (ऑरेंज)—नारंगी, संतरा, संगतरा, कंवला। यह मीठा या खट-मीठा फल ज़ायक़ेदार और कई जाति का होता है। हिन्दुस्तान में नागपूर और सिलहट का सन्तरा मशहूर है। 'बर्गमट' (Bergamot) और 'सेविल' (Seville) जाति के छोटी नारंगी के फूल से खुशबूदार तेल निकाला जाता है जो यू-डी-कोलोन तयार करने में मिलाया जाता है।

Orchids (आर्किडज़)—वनस्पतियां। यह हज़ारों क़िस्म के छोटे छोटे पौधे होते हैं। बाज़ बाज़ क़िस्में, जो बहुत कम पाई जाती हैं, वे बड़े क़ीमती पौधे होते हैं। गमलों में इन्हें बड़े इहतियात से शौक़ीन और अमीर लोग अपने बाग़ों मे लगाते हैं और घर की शोभा के लिये बरांडे में सजा के रखते हैं।

Orchil (आर्चिल)—Archil देखो।

Ores (ओर्ज़)—धातु-मूल, ओर्ज़। जिस पदार्थों में से धातु काफ़ी तौर से इतनी निकल सकती है कि उन से लाभ हो सके ऐसे ही पदार्थ को उप-धातु, ओर्ज़ कहते हैं, उन्हें धातु-मूल भी कह सकते हैं। जैसे लोहा यह लगभग हर मिट्टी या बालू में रहता है मगर जिन में से लोहा निकालने में खर्च देकर भी फ़ायदा हो सके केवल उसी को 'ओर्ज़' या धातु-मूल कहेंगे और जिन में लोहा इतना कम हो कि उस के निकालने में सर्फ़ा बेशी हो और माल कम निकले उसे ओर या धातु-मूल नहीं कहते। धातु-मूल प्रायः उन्हीं धातुओं के (१) दग्ध (Oxides) जैसे लोहा, ताम्बा, रांगा, (यह ज्यादा मिलता है) (२) सलफ़ाइड (गंधक-अंश वाले) जैसे, सीसा, सुरमा, जस्ता, (३) 'कार्बोनेट' (Carbonate) जैसे लोहा, जस्ता और सीसा, होते हैं।

Organzine (आर्गनज़ाइन)—एक क़िस्म के बट का रेशम। शुद्दियों से निकालती समय जब रेशम की कई तार मिलाकर बटते हैं तो इस सूत की तार या रील की तार (Reel thread) कहते हैं। ऐसी एकहरी तार को एकतारा 'सिंगल्ज़' (Singles) कहते हैं और कई एक-तारा या सूत मिलाकर उलटे बटकी बटी तार को 'आरगंज़ाईन' (Organzine) याने दुतारा या तितारा कहते हैं।

Orleana (आरालियाना)—Annatto देखो।

Ormolu (आरमोलू)—झूठा सोना। ताम्बा और जस्ता को मिलाकर सोने की रंगत की धात तयार की जाती है उसी का नाम 'आरमोलू' है। गहरी ज़र्दी लाने के लिए कभी कभी गंधक का तेज़ाब भी चढ़ाया जाता है।

Orpiment (आर्पिमिण्ट)—हरताल। यह गंधकमय संखिया है। इस का रंग चमकदार ज़र्द होता है। सब से ज्यादा उत्तम हरताल पार्शिय में आता है। हिन्दुस्थान में यह मनसियारी (कुमाऊं), चित्राल, अपर बर्म्हा और स्वात वग़ैरा से भी आती है। हरताल लगभग औसतन ३२२५ मन ४६६२५ रु० की हिन्दुस्तान मे आती है और लगभग ४५६ मन मालियती ७८७५ रु० की चलान होती है।

इसे 'किंग्ज़ यलो' (King's Yellow) या 'सल्फ्यूरेट आफ़ आरसेनिक' (Sulphuret of arsenic) भी कहते है।

अंग्रेजी केमिस्टरी में संखिया याने सफ़ेद सम्बुल, हरताल और मैनसिल एकही हैं केवल रूप भेद है। हरताल रंगसाज़ी मे काम आती है। गंधक और संखिया मिलाकर तपाने से नक़ली हरताल भी बनाई जाती है।

Orris roots (ऑरिस रूट)—यह Iris Florentina नामक पेड़ की जड़ है और टस्कनी में यह पेड़ ज्यादा लगाया जाता है। पेश्तर यह जड़ बलवर्धक समझी जाती थी। अब इसका सफ़ूफ़ मैदे में मिलाकर केवल चेहरे पर मलने के काम आता है और 'वायोलेट पौडर'

(Violet powder) के नाम से बिकता है । यह जड़ ज्यादातर Leghorn शहर से ज्यादा चलान होती हैं ।

Osiers (ओसियर्ज़)—तीलियों वाली घास या झाड़ । ऐसी घास या झाड़ जिनके छड़ या तीलियों से टोकरे या चटाइयां बन सकें । हिन्दुस्तानी भाषा में बेंत या छड़ या सींख के सिवाय कोइ शब्द इनके लिए नहीं है, यद्यपि सैंकड़ों क़िस्मकी ऐसी घास होती है जैसे बेद, बंत बिस, बैस, नरकट वग़ैरा ।

Osmium (आस्मिअम्)—आस्मियम । यह एक नई क़िस्म की धात है जो बहुत कम पाई जाती है, प्रायः (Platinum) 'प्लाटिनम' और विशेष करके 'इरीडियम' (Iridium) के साथ मिली हुई पाई जाती है । यह ढालने योग्य और बहुत भारी चीज़ होती है इस पर न तो मोर्चा लगता है और न यह जल्दी घिस्ती है इस लिए प्रायः उमदा निबों की नोक पर या कम्पास के नोक पर लगाई जाती है ।

Ostrich Feathers (आस्ट्रिच फ़ीदर्स)—सीमुर्ग के पर । इस के पर कलग़ी तुर्रा लगाने के लिए बड़ी कीमत से बिकते हैं । इन परों के कई दर्जे होते हैं और उसी हिसाब से क़ीमत ली जाती है । सौथ अमेरिका में सीमुर्ग़ ज्यादा होते हैं । इस के परों का अच्छा रोज़गार होता है ।

Oswega Corn (ऑस्वेगा कॉर्न)--मकई का आटा । आस्वेगा नाम के देश में इस का आटा ज्यादातर पीसा जाता है, इस लिए यह नाम पड़ा है ।

Otter Skins (ऑटर स्किन्ज़)—ऊदबिलाव के चमड़े । यह दो जाति के जानवर होते हैं एक तो मीठे पानी में से शिकार करने वाला और दूसरा खारा पानी याने समुद्र में रहने वाला है । इन दोनों के चमड़ों की बड़ी मांग रहा करती है जिन से दस्ताने वग़ैरा बनाए जाते हैं ।

Otto-de-Roses, Otto of Roses (ओटो डी रोज़ेज़)—इत्रे गुलाब । गुलाब का इत्र रोमेलिया, पर्शिया और हिन्दुस्तान में तयार होता है और इन्हीं

देशों में गुलाब लगाया भी ज़्यादा जाता है। Rose देखो।

Ova (ओवा)—मछलियों के अंडे। ओवा के माने तो अंडे के हैं हीं मगर तिजारत में यह सिर्फ़ मछलियों के अंडे के लिये ही इस्तेमाल होता है।

Oxalic acid (आक्ज़ालिक एसिड)—आक्ज़ालिक एसिड। यह तेज़ाब बड़ा कड़ा ज़हर है। बनस्पतियों में यह बहुत पाया जाता है। लकड़ी के बुरादे को हाइड्रेट आफ़ पोटाश और सोडा में दग्ध कर के तयार किया जाता है। स्टार्च याने नशास्ता अथवा शक्कर को शोरे के तेज़ाब में भी गला कर बनाते हैं। यह तेज़ाब छींट छापने और सीख़ वग़ैरा साफ़ करने के काम में लाया जाता है और शिल्प के कई कामों में आता है।

Oxen (आक्सेन)—बैल, बर्धा, धूर, ढोर डांगर (Zebu or Humped Ox)। नर जाति सांड कहाते हैं और बधिया किये हुये सांड़ को बैल (Horned Cattle) कहते हैं जो हल जोतने, छकड़े खींचने, बोझा उठाने, बहली चलाने, पानी सींचने के लिये चरसा या पुरवट खींचने इत्यादि के काम आते हैं। और मादीन गाय, गउ और गैया (Cow or Milch Cow) कहाती हैं। यह बच्चा लेने और दूध देने के लिये पाली जाती हैं। इन की उमदा नस्लों के बढ़ाने का व्यवसाय इस देश में बहुत ही कम है। इस कमी के लिये हिन्दुस्तान बदनाम है।

गाय और बैल की कई क़िस्में और कई खेत होते हैं उन में बहुत कुछ अन्तर होता है। हिन्दुस्तान के गाय बैल से विलायत और उत्तर एशिया के गाय बैल से ज़मीन आसमान का फ़र्क़ है। हिन्दुस्तान के गाय बैल की मशहूर नस्लें यह हैं।

(१) हांसी हिसार के ढोर—इस नस्ल की गाय बहुत बड़ी दुधार होती हैं और आला दरजे की नस्ल मे गिनी जाती हैं, इन के अन्तर जातियों मे हरियाना, सिरसा, चनाब, धन्नी, माजा, मौंट गोमरी पहाड़, डेरा इस्माईलखां इत्यादि के खेत मशहूर हैं। इन के बैल भी बड़े और तगड़े होते हैं।

(२) मैसूर और कुर्ग के ढोर- इस नस्ल की गाय अच्छी दुधार होती है और बैल बड़ही मेहनती और खूब तेज़ दौड़ने वाले मशहूर हैं। इस नस्ल के बैल बहुत ज्यादा पलटनों मे तोप खींचने और बारबरदारी के लिये रक्खे जाते हैं। यहां के मशहूर खेत अमृतमहाल, हल्लीकार, चित्तलद्रुग इत्यादि हैं।

(३) काठियावाड़ी ढोर—यह गिर और काठिवाड़ की गायें दूध देने के लिये नामी हैं।

(४) गुजराती ढोर—इस जाति के बैल खेती बारी के काम मे बहुत मेहनती और मज़बूत होते हैं। मशहूर खेत पालनपुर, दीसा वग़ैरा है।

(५) दखनी या खान्देशी ढोर—इस जाति की गाय बहुत कम दुधार होती है, बैल गोकि छोटे क़द के होते हैं मगर बड़े तेज़ और फुर्तीले और मेहनती होते हैं।

(६) मद्रासी ढोर—इस देश की कई नस्लें उमदा होती हैं जिन मे से ओंगल जाति की गाय बहुत दुधार होती हैं। बैल भारी और सुस्त। यहां के कई खेत मशहूर हैं जैसे अलमबाडी, बरगपुर वग़ैरा।

(७) राजपुताने के ढोर—इस नस्ल के गाय बैल हांसी हिसार के ढोर से बहुत कुछ मिलते जुलते हैं।

(८) संयुक्त प्रान्त के ढोर—यहां के ढोर मे से नानपाड़ा के खेत के ढोर सब से अच्छे होते हैं। खेरी या पवार या बांगर के ढोर भी अच्छे हैं। दूसरा खेत बहराइच का है।

(९) मध्य प्रदेश के ढोर—नीमारी जाति और अर्वी के ढोर मशहूर हैं। यह जानवर औसत क़द के मगर तेज़ और उमदा होते हैं।

(१०) बंगाल के ढोर—यह हिन्दुस्तान भर मे सब से खराब गिने जाते हैं।

(११) पहाड़ी—हिमालय पहाड़ के बाज़ जाति के ढोर तेज़ और मज़बूत होते हैं। इनके रोयें सरदी की वजह से बड़े होते हैं।

इनके अलावा भैंस और भैंसे (Buffaloes) भी इस देश में दूध और बारबर्दारी के लिये पाले जाते हैं। इनकी चार जातियां हैं:—

(१) दिल्ली की भैंस—इस क़िस्म में संयुक्त प्रान्त, पंजाब और सिंध के खेत शामिल हैं। इनकी सींगें मोटी, छोटी और पीछे को मुड़ी हुई और ऐंठ खाए हुये होती हैं इसी लिये आम तौर से मरहा या कुंडी भैंस कहाती हैं और खूब दूधार होती हैं।

(२) जाफ़राबादी भैंस—इनके सींग बहुत भारी होते हैं और यह खुद भी बड़े डील डौल के होते हैं।

(३) भूरे रंग की भैंस—यह ज्यादा दुधार नहीं होतीं और अगर हुईं भी तो थोड़े दिनों के लिये।

(४) सूरती या दखनी—इन के सींग सीधे होते हैं।

इन ढोरों और भैंसों का बनज अच्छा होता है। ढोर के बेचने के लिये कई बड़े बड़े मेले खास कर कार्तिक के महीने में होते हैं अन्य महीनों में भी मेले हुआ करते हैं। गाय, बैल, भेड़, बकरे वग़ैरा नेपाल, सायाम वग़ैरा बाहरी रियासतों से भी बहुत आया करते हैं। सन १९०६-७ में ७०,१२,६०७ रुपये और सन १९०९-१० में ३४,३४,८८४ रुपये के ढोर आये। इनकी आमदनी ज्यादातर नेपाल से संयुक्त प्रान्त में होती है जहां सन १९०९-१० में ३४·२५ लाख रुपये के आये थे।

ढोर डांगर यहां से बाहर कम भेजे जाते हैं और जो कुछ जाते हैं वह सूबा बंगाल से होकर जाते हैं। सन १९०९-१० में १३६७५४५ के जानवर बाहरी रियासतों को गये मगर इस में सभी तरह के जानवर शामिल हैं (सब प्रकार के जानवर लगभग ७५ लाख रुपये के आते हैं इस हिसाब से तो रवानगी बहुत कम है)। इसके अलावा जहाज़ द्वारा विदेशों में भी गाय बैल जाते हैं जिनकी मालियत सन १९०९-१० में २·२८ लाख रुपये की है और तायदाद १३०९। उमदा नस्ल के गाय बैल बम्बई से ब्राज़ील को और मदर्न इंडिया से सिलोन व स्ट्रेट सेटलमेण्ट में मंगाये जाते हैं।

Oysters (ऑयस्टर्ज़) –घोंघे। इन की अनेक जातियां हैं—कोई खाने के काम आता है, किसी से कौड़ियां किसी से शंख निकाले जाते हैं। मोती जिन घोंघों से निकलता है वह Pearl Oysters कहाते हैं। खाने के घोंघे सब से अच्छे करांची में होते हैं। शंख Shell oysters जाति के घोंघे का कचकड़ा है और मनार की खाड़ी और ट्रावंकोर व टूटीकोरन वग़ैरा के समुद्र से गोतेख़ोर लोग निकालते हैं। कौड़ी के घोंघे भी कई तरह के होते हैं, छोटी सफ़ेद कौड़ियां Cypræa moneta जाति के घोंघों में पाई जाती है। पेश्तर कौड़ियां सिक्कों की जगह चला करती थीं। कौड़ियां अब भी लकादिव, मलादिव, ईष्ट अफ़रिका इत्यादि से हिन्दुस्तान में लाई जाती है। औसत आंमदनी इस की लगभग ७०,८०० रु० सालाना की होती है।

Ozokerite (ओज़ोकेराइट)—भूंई मोम। एक क़िस्म की शिलारस जो ज़मीन से बहुत जगह निकलती है मगर यह 'गलीशिया' (Galicia) में बहुत पाई जाती है। यह ज़र्द या सब्ज़ी मायल उमदा होती है और घटिया स्याह रंग की होती है। इसे 'भूंई मोम' कहना बेजा न होगा। देखने में प्याराफ़िन की तरह होती है। यह बड़ी मुशकिल से साफ़ होती है। इस भुइ-मोम से मोंमबत्तियां बनती हैं क्योंकि यह जल्द टिघलती नहीं मगर खूब बलती है। खनिज पदार्थों में से इसे अलग निकाल लेने के दो तरीके हैं एक तो यह कि स्पिरिट में इसे घुला कर कोयले के टपके से छान लेते हैं और बाद में भभके द्वारा स्पिरिट अलग कर लेते हैं। दूसरा तरीक़ा यह है कि गंधक के तेज़ाब में उबाल कर फिर एक खास क़िस्म के भभके से चुआ लेते हैं। मोम बत्ती बनाने में इस का इस्तेमाल बहुत होता है।

P.

Paints (पेन्ट्स)—रंग रौग़न, रौग़नी रंग, रंगसाज़ी के मसाले। लकड़ी या धातु वग़ैरा की चीज़ों पर रंग रौग़न इस लिए किया जाता है कि उस चीज़ की हिफ़ाज़त हो जाय और गले सड़े नहीं या उस पर मोरचा या कीड़े न लगें, इस के अलावा रंग रौग़न कर देने से उस की ख़ूबसूरती बढ़ जाय। इस काम को 'रौग़नसाज़ी' (painting) कहते हैं।

रौग़न साज़ी के रंग ज्यादातर तेल में मिला कर तयार कि[ए] जाते हैं, पानी में घोल कर भी रंग किया जाता है। रौग़नसाज़ी करने के पहिले प्रायः 'अस्तर' चढ़ाया जाता है, कई तरह की रंगत लाने के लिये रंगों का मेल भी दिया जाता है। रौग़न या रंग पोतने याने लगाने में दिक़्क़त न हो उसे पतला करने का अलग मसाला होता है और रौग़न लगाने बाद वह जल्द सूख जाय इस लिए चं[द] चीज़ों का मेल देना ज़रूरी होता है।

अस्तर चढ़ाने के लिए ज्यादातर सफ़ेदा, इस्तेमाल होता है। सफ़ेदा भी कई मेलों से तयार होकर जुदे जुदे नामों से बिकता है। (Pigment देखो)।

सुखाने-वाला-मसाला याने 'ड्रायर्ज़' (Driers) सेंदुर, मुर्दासंख वग़ैरा हैं और रंग भी कई तरह के होते हैं जैसे गेरू, सेंदुर, इंगुर, हिरमिज़ी, ज़ंगार, लाजवर्द, प्यूड़ी वग़ैरा अनेक रंग मिलाए जाते हैं। रौग़नसाज़ी के सैकड़ों नुसखे रंग के अनुसार और जिन जिन चीज़ों पर चढ़ाना हो उन के अनुसार हैं, मुसव्वरी के नुसखे अलग हैं।

हर एक क़िस्म की चीज़ों के लिये जुदे जुदे रंग के नुसखे होते हैं और रंग भी कई तरह के होने से यह बहुत बड़ा विषय है जि[स] के लिए एक अलग ही पुस्तक लिखी जा सकती है। इस का मु...

व्यापार होता है। सन १९०८-९ में ६०·३८ लाख रु० के और सन १९०९-१० में ५७·२९ लाख रुपये के पेण्ट हिन्दुस्तान में आये।

Palisander wood (प्यालीसेंडर उड)—काला सीसो। यह पेड़ ब्राज़ील में होता है। इस का नाम Dalbergia nigra है। इस की लकड़ी 'फ़रनीचर' बनाने के काम आती है। कभी कभी सित्सल और धारीदार आबनूस को भी इसी नाम से पुकारते हैं।

Palladium (प्यलेडियम)—पलेडियम। प्लाटिनम की तरह की यह भी एक उत्तम धातु है और प्रायः प्लाटिनम के धातु-मूल में मिली पाई जाती है। यह सफ़ेद रंग की सख्त धातु है जिस पर मौसमी असार से दाग़ नहीं पड़ता। इस से क़ीमती यंत्र बनते हैं मगर यह महँगा मिलती है इसलिए अभी इस का इस्तेमाल ज्यादा नहीं होता। इस की तार या पत्ती मिला करती है।

Paper (पेपर)— कागज़। लिखने की मामूली चीज़ कई चीजों से तयार की जाती है, जैसे गूदड़, इस्पार्टो घास, बैब घास, लकड़ी का बुरादा बांस इत्यादि। इन सब को रासायनिक दवाओं से खूब साफ़ कर के पानी में कूटते हैं यही गूदा चलनीदार पटरियों पर फैलता है और सूख कर कागज़ बन जाता है। अब यह सब काम मशीन से होता है।

हिन्दुस्तान में पहिले कागज़साज़ी का कारोबार हाथ से होता था। अब कागज़ बिलायत वग़ैरा से ज्यादा आता है। इस देश में कुल ९ पेपर मिलें हैं तौ भी बिदेशी कागज़ की आमदनी हर साल औसतन ८ लाख रुपए की बढ़ती ही जाती है। सन १९००-१ में ४५,२९,९९६ रु० १९०१-२ में ५२,७१,६३४ रु० १९०५-६ में ७०,४८,९७८ रु० और १९०६-७ में ८०,११,१०५ रु० का कागज़ आया। सन १९०९-१० में १ करोड़ रु० से ज्यादा का कागज़ बिलायत से आया।

सबसे ज्यादा कागज़ यूनाइटेड किंगडम (इंगलैंड) से आता है और इसके बाद जरमनी फिर आस्ट्रिया-हंगरी और तब बेलजियम का नम्बर है। बृटिश इंडिया में कुल ८ पेपर मिल्ज़ हैं जिन में अभी

मामूली क़िस्म के ही काग़ज़ तयार होते हैं। सन १९०८ में इन मिलों ने ५,५३,५१,५४० पौंड (वज़न) काग़ज़ मालियती ७४,२६,०४७ रु० के और सन १९०९ में ५,५४,५२,९८० पौंड काग़ज़ ७७,५३,३२७ रु० के तयार किये थे।

ग्वालियर में एक पेपर मिल और है जो ऊपर की तफ़सील में शामिल नहीं है। इस तरह हिन्दुस्तान भर में कुल ९ मिलें काग़ज़ की हैं।

काग़ज़ भी कई तरह के होते हैं जैसे आर्ट पेपर, लेटर पेपर, प्रिंटिंग पेपर, पार्चमेंट, ग्लेज़्ड या रफ़ इत्यादि। इनकी नाप के हिसाब से भी इनके अलग अलग नाम हैं जैसे सूपर-रायल, डीमाई, फुलस्केप वग़ैरा।

Papier-Mache (पेपर-मेशी)—कूटे हुए काग़ज़ की चीज़ें। यह चीज़ हलकी, सख्त, उमदा और मज़बूत होतीं है और बहुत दिन चलती हैं। कुटे काग़ज़ के क़लमदान, तश्तरियां वग़ैरा तयार करने का कारोबार काश्मीर में बहुत होता है। जौनपुर में भी यह काम होता है। घटिया काग़ज़ को सरेस, राल, जल्द सूखने वाला तेल और रुफ़ेदे में मिलाकर कूटते हैं और जो बनाना होता है उसे बनाकर उस पर खूबसूरत रंगसाज़ी और बेलबूटा बनाते हैं।

इस के तयार करने के दो तरीक़े हैं (१) कई काग़ज़ों को तह पर तह लेई से जोड़कर मोटा करना और शिकंजे में कसकर दबा देना। इस तरकीब से तश्तरियां वग़ैरा बनती हैं। जब दफ्ती गीली रहती है उसके किनारे उठा दिये जाते हैं। (२) दूसरी तरकीब में काग़ज़ को भिगा कर और कूटकर उसका गूदा बनाते हैं और तब इस गूदे को ठप्पे वग़ैरा पर जमाकर क़लमदान, डब्बे वग़ैरा सुखा लेते हैं। फिर चिकना करके उन चीज़ों पर रँग रौग़न व बेलबूटे बनाते हैं।

Paraffin (प्याराफ़िन)—प्याराफ़िन। जिस कादा या मट्टी में तेलका अंश रहती है उसे 'बिटुमिनस शेल' (Bituminous shale) कहते हैं, उसको भबके द्वारा चुआने से कोलग्यास तयार करने में प्याराफ़िन निकलता है। खुश्क कादे को तोड़कर बंद बरतन में तपाने से बलने

वाली ग्यास, तेल और भाप ऊपर उठती है। तेल जो निकलता है उसे फिर चुआने से प्याराफ़िन निकलता है और आम तौर से यह मिलता है। जो तेल भारी होता है वह मशीनों में चुपड़ने के काम में लाया जाता है। दूसरी बार चुआने में जो गाद बैठ जाती है वही 'प्याराफ़िन' है। इसी को जब साफ़ कर लेते हैं तो यह 'प्याराफ़िन मोम' (Paraffin wax) के नाम से पुकारी जाती है।

मोमबत्ती बनाने में या गंधक की दियासलाई में गंधक की जगह या मोम की जगह इसका इस्तेमाल होता है।

Paraffin Wax (प्याराफ़िन व्याक्स)— Paraffin देखो।

Parchment Paper (पार्चमेंट पेपर)—पार्चमेंट पेपर। चमड़े का काग़ज़। पशुओं की खालों से यह काग़ज़ बनाया जाता है खास कर के भेड़ और बकरियों की खाल का काग़ज़ लिखने के लिए बनता है और जो पार्चमेंट दफ्तरी या जिल्दबंद लोग इस्तेमाल करते हैं वह सूअर के चमड़े से तयार होता है। नक़्क़ारों पर मढ़ने का पार्चमेन्ट गदहे की खाल से तयार किया जाता है।

मामूली काग़ज़ को पानी और गंधक के तेज़ाब में तर कर के फिर तेज़ाब का असर उस पर से दूर कर दिया जाता है, इस तरकीब से काग़ज़ की सूरत बिलकुल बदल जाती है और मामूली काग़ज़ से पचगुनी मज़बूती उसमें आ जाती है।

नक़ली पार्चमेण्ट पेपर इस प्रकार बनता है कि मामूली काग़ज़ जिस पर कलफ़ न लगा हो लेकर गंधक के तेज़ाब के हलके घोल में ५ या ६ सिकंड तक तर कर के निहायत ही हलके अमोनिया से धो डाले।

पार्चमेंट पेपर अगर किसी के साथ चिपकाना हो तो काग़ज़ के चिपकने वाले भाग को अलकोहल या ब्रंडी से तर कर के सरेस या लेई से चिपका ले। अथवा एक मामूली काग़ज़ उस पर चिपका कर उसे फिर जहां चिपकाना हो चिपका ले।

यह काग़ज़ वेजेटब्ल 'पार्चमेंट' (Vegetable Parchment) कहाता है। इस पर ट्रेसिंग, प्लान वग़ैरा बनाया जाता है।

Partridge wood (पार्ट्रिज उड)—सौथ अमेरिका और वेस्ट इंडीज़ में एक क़िस्म की लकड़ी होती है जिस का रंग गुलाबी होता है और उस पर बटेर की तरह के चितले चितले दाग़ होते हैं। सब से ज्यादा क़ीमती ऐसी लकड़ी Andira inermis नाम के पेड़ की होती है। इस लकड़ी से छड़ियां, मूठ, केबिनेट वग़ैरा बनते हैं।

Patchauli (पचौली)—पचोली, पचापात। यह पौधा सेंट्रल इंडिया में बम्बई से बेरार तक जंगली और लगाया हुआ दोनों पाया जाता है। इस के डंठलों से खुशबू निकाली जाती है और तेज चन्दन के इत्र की तरह उस की महक होती है। विलायती इत्रों में इसका बहुत इस्तेमाल होता है। असल पचोली पीनांग और स्ट्रेट सेटेलमेंट में होती है। इस के डंठल योरोप में इस का सुगंधित तेल निकालने के लिए भेजे जाते है। पेश्तर यह तेल काशमीरी शालों पर मला जाता था और अब भी हिन्दुस्तान में पचोली तामाखू में डालने या बाल का मसाला तयार करने में इस्तेमाल होता है।

Peachwood (पीच उड)—Nicaragua देखो।

Pearl (पर्ल)—मोती। सिलोन और फ़ारस की खाड़ी से ग़ोतेख़ोर लोग मोती के सीपवाले घोंघे समुद्र के अंदर से निकालते हैं। मोती के दाने सफ़ेद, गुलाबी, काले, मटमैले इत्यादि रंग के होते हैं और उन की चमक कभी मठ्ठल या कभी चमकदार होती है। अब नक़ली मोती भी अच्छे बनने लगे हैं। कभी कभी नारियल में से मोती की तरह का दाना निकलता है जिसे 'कलप्पा' कहते हैं चीनी लोगों में इस की बड़ी क़दर और क़ीमत होती है। कभी कभी नदी के सीपों में से भी मोती निकलता है। इस का बहुत बड़ा व्यापार हिन्दुस्तान में होता है।

सन् १९०८-९ में ५१·६२ लाख रुपए का और सन् १९०९-१० में ७५·११ लाख रुपए का मोती फ़ारस की खाड़ी, अरब की खाड़ी और बहरिन स्ट्रेट से आया।

(१) मोती साफ़ करना—पानी में भूसी या चोकर उबाले और इस पानी में थोड़ा साल्ट आफ़ टार्टर (Salt of Tartar) और फ़िटकिरी का सफूफ़ मिलाकर इसी गर्म गर्म घोल में मोती डाल दें। जब हाथ सहने लायक़ गर्माहट हो जाय तब उँगलियों या हाथों से रगड़े। जब पानी ठंडा हो जाय तो फिर नया घोल उबाल कर तयार करें और उस में मोती डाल कर साफ़ करे। इसी प्रकार कई बार करे जब तक मोती खूब साफ़ न हो जाय। फिर कोसे पानी से धोकर मोतियों को अंधेरी कोठरी में सफ़ेद कागज़ पर फैला कर सुखा लेवे।

Pearl Ash (पर्ल ऐश)—साफ जवाखार। Potash देखो।

Pepper (Black and White) (पीपर)—गोल मिर्च, काली मिर्च। यह एक बेल होती है जो ट्रावंकोर और मालाबार में उगती है। मालाबार की गोल मिर्च सब से उत्तम गिनी जाती है। बंगाल में जसोर, आसाम में सिलहट, बम्बई में कनाडा, मद्रास में कालीकट इत्यादि में बोई जाती है। गोल मिर्च तीन तरह की होती है (२) आलमकोटा (२) कल्ली बल्ली (३) चेरियाकोर्दा कहाती है।

गोल मिर्च के दाने पेड़ से लाल लाल तोड़ लिये जाते हैं और धूप में सुखाने से काले हो जाते हैं। काली मिर्च को पानी में भिगा कर रगड़ने से उस के ऊपर का स्याह छिलका उतर जाता है और कभी कभी क्लोराईन से भी साफ़ कर के भूरे रंग के या दाने सफ़ेद कर लेते हैं और यही सफ़ेद गोल मिर्च कहाती है। यह गर्म मसाले में खाई जाती है, इस का स्वाद झालदार कड़ुआ होता है। इस के स्याह छिलके में ही ज़्यादा तलखी और फ़ायदा है।

काली मिर्च की तिजारत ज्यादा होती है। सन १९०३-४ में ५०७१५४१ रु० की सन १९०५-६ में ६१,०७३५७ रु० और सन १९०६-७ ३३,०१,२३७ रु० का गोल मिर्च हिन्दुस्तान से चलान हुई। सन

१९०९-१० में २९.५ लाख रुपए की रवाना हुई, इस साल भाव गिरा हुआ था।

Pepper, Long (लॉंग पीपर)—पीपल या पिपलामूल। यह पौधे हिन्दुस्तान के गर्म हिस्सों में नेपाल के पूरब आसाम तक खासिया पहाड़, बंगाल बम्बे, ट्रावंकोर, सिलोन और मलाका द्वीप में पैदा होते हैं।

Pepper, Red or Pod or Guinea (रेड पीपर, पॉड पीपर, गिनी पीपर)—लाल मिर्च। यह कई जाति की होती है, जैसे लाल रंग की, सिकुड़न दार, पीले रंग की, गोल, काफ़री मिर्च, काले रंगत की, गाछ मिर्च, लौंगिया मिर्च। यह भी लगभग ७ या ८ लाख रुपये की रवाना होती है।

Peppermint (पिपरमिण्ट)—पिपरमिंट। पूदीने के क़िस्म का एक पौधा होता है और इंगलैंड में ज्यादा बोआ जाता है। इस का अर्क़ मशहूर दवा है।

Persian Berries. (पर्शियन बेरीज़)—फ़ारस देश के एक पेड़ Rhannus Catharticus का फल है जिस में से ज़र्द रंग निकलता है और वह छींट छापने के काम आता है। 'यलो बेरी' Yellow Berries भी देखो।

Persian gum resin (पर्शियन गम रेज़िन)—Galibanum देखो।

Persian Liqiad (पर्शियन लिक्विड)—Galibanum देखो।

Peru Balsam (पीरू बालसम)—पीरू का बलसान। सौथ अमेरिका में Tolinfera जाति के पेड़ में से इस नाम की राल निकलती है। उबलते हुए पानी मे इसे डालने से असल पीरू का बिलसान ऊपर उतरा आता है और तब उसे कांछ लेते हैं।

Peruvian Bark (पीरूविअन बार्क)—Cinchona देखो।

Petroleum (पेट्रोलिअम)—मट्टी का तेल, भूतैल। यह Rock Oil याने चट्टान का तेल या शिला-तैल भी कहाता है इसे भू-तैल कहना चाहिए। यह जमीन या चट्टान में से पसीज कर सोते के पानी की तरह ज़मीन

के अन्दर खूब गहराई में निकला करता है और कूएं खोद कर इसे निकालते हैं। इस तेल में 'प्याराफ़िन' (Paraffin), 'ओलीफ़िन' (Oleifine), बेनज़ीन वग़ैरा मिला रहता है। ज़मीन के अन्दर जो पत्थर के कोयले हैं उस का रस अन्दर की गरमी पाकर चू आता है। खान से निकलने पर यह तेल किसी काम का नहीं रहता, इसे भभके से चूआ कर कई तरह की चीज़ें इस में से निकाल लेते हैं और तेल बालने के काम आता है। खूब साफ़ किये हुए तेल को 'प्याराफ़िन आयल' (Paraffin Oil) कहते हैं। मैला तेल मशीनों में चुपड़ने के काम आता है। पेट्रोलियम में से कई चीज़ें निकाली जाती हैं।

जैसे काजल, कई तरह के रंग, कारबोलिक एसिड, अनीलीन, शक्करी (Saccharines), 'वासलीन' (vaseline) इत्यादि। उमदा और खूब साफ़ किया हुआ तेल पेट्रोलियम कहाता है, इस से भी ज्यादा साफ़ किया हुआ तेल जिस में धूआं नहीं होता 'गेसोलीन' (Gasoline) है और इन सब से ज्यादा साफ़ की हुई उड़ जाने वाली चीज़ जो निकाली जाती है वह 'रीगोलीन' (Rhigolene) कहाता है। बदन में जहां जलन या व्यथा होती है वहां लगाने से ठंडक आजाती है और ऐसा मालूम देता है कि मानो बरफ़ रख दिया गया है। पेट्रोलियम से 'बेनज़ीन' (Benzine) और 'बेनज़ोल' (Benzole) भी निकलता है जिस में रबड़ और गटापरचा घुल जाता है। 'व्यासलीन' मरहम बनाने के काम लाई जाती हैं। भारी और गाढ़ा तेल जो होता है वह मशीनों में चुपड़ने के काम आता है।

दुनियां में रूस वग़ैरा कई देशों में यह निकाला जाता है। हिन्दुस्तान में भी कई सूबों में यह पाया जाता है मगर बर्म्हा देश में इस की ५ कम्पानियां हैं और आसाम में २ हैं। बर्म्हा से यह बहुत आता है इस के अलावा युनाइटेड स्टेट, बोर्नियो, स्ट्रेट सेटलमेंट, सुमात्रा व रूस वग़ैरा कई देशों से भी आता है। सन १९०६-७ में २,४०,५४,०११ रु० का ६६,०६,५३५ गेलन और सन १९०८-९ में ३१०·९१ लाख रुपए का और १९०९-१० में ३१४·५५ लाख का तेल आया, इन अंकों में ८० फ़ी सदी खाली केरोसिन तेल है बाकी मिनरल आयल है।

हिन्दुस्तान से लगभग ८·२४ लाख रुपये का यह तेल बाहर भी भेजा गया।

Peiwter (प्यूटर)—फूल, भरत। रांगा, सुरमा, ताम्बा या सीसे के मेल से एक तरह की मिश्रित धात बनाई जाती है और इस के बरतन वग़ैरा बनते हैं। इस पर दाग़ जल्दी नहीं लगता।

(१) उमदा भरत—५ सेर रांगा और १ सेर सीसा मिलाने से बनता है और मामूली भरत में ८२ भाग ख़ालिस रांगा और १८ भाग सीसा रहता है। यूं तो भरत में कई वज़न का मेल देकर कई क़िस्म का बनाया जाता है। कभी कभी ताम्बा और सुरमा भी मिलाया जाता है।

(१) भरत की चीजें जोड़ने का मसाला। २ भाग बिस्मथ, ४ भाग सीसा और ३ भाग रांगा। यह नुसख़ा नाजुक व सुबुक चीज़ों के लिए है।

(ख) १ भाग बिस्मथ, २ भाग सीसा और २ भाग रांगा। यह मामूली चीज़ों के लिए।

Phenol (फ़ेनोल)—Carbolic Acid देखो।

Phormium (फ़ोर्मियम)—न्यूज़ीलैंड का सन्। 'न्यूज़ीलेंड फ्लाक्स' (Newzealand Flax) भी इसे कहते हैं। टाट, बोरे, वग़ैरा इस से बनते हैं।

Phosphates (फॉस्फेट्स)—एक क़िस्म की बनावटी खाद। हड्डी वग़ैरा के मेल से तयार की जाती है।

इस के सिवाय और भी द्रव्यों के फ़ास्फ़ेट तयार किए जाते हैं जो रसायन शास्त्र की क्रिया और हुनर के काम मे इस्तेमाल होते हैं, इन में सब से ज़्यादा काम में आने वाला फ़ास्फ़ेट आफ़ अमोनिया (Phosphate of Ammonia) और फ़ास्फ़ेट आफ़ सोडा (Phosphate of Soda) हैं।

Phosphorus (फ़ास्फ़ोरस)—फ़ासफ़ोरस। यह हलके ज़र्द रंग का पदार्थ मोम की तरह नर्म होता है। ज़रा सी गरमी व हवा पाकर भी

इस में आग बल उठती है इसलिए इस की बड़ी हिफ़ाज़त की जाती है और पानी में हर दम डुबाए रखना पड़ता है। फ़ासफ़ोरस जानवरों की हड्डी और पुट्ठों में से निकाला जाता है। हाड़ के कोयले को तेज़ गंधक के तेज़ाब में प्रयोग करने से यह निकलता है। शिल्प विद्या में यह बहुत काम आता है। दियासलाई बनाने की तो यह ख़ास चीज़ है।

Physic Nut (फ़िज़िक नट)—सफ़ेद अरंड, नागबेरंड, रंतन जोत। दवाइ में इस का इस्तेमाल बहुत होता है। इस के तेल से चीन वाले एक क़िस्म की वारनिश भी बनाते हैं। यह तेल ऊनी कपड़ों के कारख़ानों में इस्तेमाल होता है।

Piacaba, Piassava (पिआकाबा, पियास्सावा)—पियासाबा। यह ब्राज़ील देश के दो क़िस्म के ताल वृक्ष का रेशा है जो उन के पत्तों में से निकलता है। इन रेशों से ब्रश, झाड़ू वग़ैरा तयार होती हैं और इन से घटिया रस्से भी बनते हैं।

Pickles (पिकल्ज़)—अचार। फल तरकारी या मसालों की बनी हुई नमकीन या खटाईदार खाने की स्वादिष्ठ चीज़। यह रोज़गार पहिले से होता आया है मगर सफ़ाई, उत्तम रीति और नियम से नहीं किया जाता। अगर यह काम सफ़ाई के साथ किया जाय तो ख़ूब फ़ायदा हो। विलायत से अचार व मुरब्बा वग़ैरा लगभग ३२ लाख रुपए साल का हिंदुस्तान में आ कर बिकता है।

Picric Acid (पिकरिक एसिड)—पिकरिक एसिड। कारबोलिक एसिड और गंधक के तेज़ाब में शोरे का तेज़ाब मिलाने से यह निकलता है। यह फ्रांस में ज़्यादा बनता है, और रेशम, ऊन और चमड़ा इस से रंगा जाता है।

Pigments (पिगम्येण्ट)—रौग़नसाज़ी के रंग, रंग। यूं तो बहुत से रंग रौग़नसाज़ी के काम में लाए जाते हैं मगर सब से ज़्यादा काम में आने वाले रंग यह हैं।

(१) Indian Red—हिरौंजी, हिर्मिजी। यह खनिज पदार्थ है और खान से निकलता है। नक़ली भी बनाया जाता है—कसीस को आंच देकर फूकते हैं जब धुआं देना बंद हो जाता है तब तेज़ आंच में भस्म करते हैं इस के बाद कई पानी से धोते हैं। जब तक धुले पानी से 'लिटमस पेपर' (Litmus Paper) का रंग बदलता रहता है तब तक उसे धोते रहते हैं फिर सुखा लेते हैं।

घटिया मसाला इस तरह तयार होता है कि ११ भाग नमक और २५ भाग कसीस को अग्नि प्रयोग कर के पानी से धो डालते हैं और पीस कर काम में लाते हैं। यह 'रूज' का काम भी देता है जिस से ज़ेवरात पर पालिश की जाती है। जब इसे रौग़न साज़ी में रंगने के लिए इस्तेमाल करते हैं तब थोड़ा सा लाल गेरू भी मिला लेते हैं। इस को दोबारा भस्म कर लेने से उमदा 'क्रोकस' (Crocus) बन जाता है।

(२) Light Red—फुका हुआ गेरू, गेरू। ज़र्द गेरू को होशियारी के साथ फूक लेने पर उमदा रंग तयार हो जाता है और तेल व पानी दोनों में घुल जाता है।

(३) Red Chalk—(चिकनी खड़िया)।

(४) Red Lead—(सेन्धुर)। यह भी सीसे की एक भस्म है। सफ़ेद को तेज़ आंच में फूक कर तयार करते हैं। इस का रंग सुर्ख़ हो जाता है। यह रंग पक्का होता है। रौग़न में मिलाने से वह जल्द सूख जाता है। अक्सर इस में ईंट का महीन चूरा मिला रहता है।

(५) Massicot (Protoxide of lead)—गुलाबी सफेदा, सफ़ेदा। सीसा धातु को फूक कर ज़र्द नारंज़ी रंग का सा जो भस्म बनता है वही यह है। बिलायती कारीगर लोग सफ़ेदा को भी 'मासीकट' कहते हैं। मगर असल में यह सीसे की लाल भस्म का नाम है। मुर्दासंग की तरह यह भी रौग़नसाज़ी के तेल को जल्द सुखा देता है, सफ़ेदे से यह ज्यादा जल्दी सुखाता है इसलिए रंगीन रौग़न में अक्सर मिलाया जाता है।

(६) Minium—सेन्दूर। सीसा भस्म को ज्यादा आंच देने से सेन्दूर तयार होता है। इस का रंग ज्यादा चटक लाल होता है। यही चीनिया सेन्दूर है।

(७) इंगुर, 'शंगरफी रंग'। यह सलफ़ाइड आफ़ मर्क्यूरी (Sulphide of Mercury) कहाता है। काले इंगुर को (Æthiops mineral or Black sulphuret of mercury) कहते हैं।

सफ़ेद रंग।

(१) White-lead सफ़ेदा—सीसे की पतली पतली पत्तियों को 'माल्ट विनेगर' (Malt vinegar) याने सिरके में लटका कर बरतन दूसरे घट से औंधा कर बंद कर दिया जाता है अथवा 'पाइरोलिग-निअस एसिड' (Pyroligneous acid) में बन्द कर रक्खा जाता है, इस तरह सफ़ेदा तयार किया जाता है। बाज़ार में जो सफ़ेदा मिलता है वह खालिस नहीं होता बलके उस में 'सलफ़ेट आफ़ बेरीटा' (Sulphate of baryta) या खड़िया मिली रहती है। इस की पहचान यह है कि हलके गंधक के तेज़ाब में बेरीटा नहीं घुलेगा। खालिस सफ़ेदा 'फ़ाइन व्हाइट' (Fine white) या 'फ्लेक व्हाइट' (Flake white) कहाता है।

बाज़ार में कई तरह के सफ़ेदे कई नाम से बिकते हैं उन की तफ़सील यह है।

(१) 'कारबोनेट आफ़ लेड' (Carbonate of lead)

(क) 'डच सफ़ेदा' (Dutch White-lead)—खालिस सफ़ेदा (flake white) ५५ सेर में खड़िया का मेल तिगुना होता है। और मामूली घटिया क़िस्म में खड़िया का मेल सात गुना मिला रहता है। रोग़नसाज़ी के लिए यह सब से उमदा सफ़ेदा है।

(ख) 'इंग्लिश व्हाइट लेड' (English white-lead)—इस में खड़िया का मेल बहुत ज्यादा रहता है और इस का रंग भी अच्छा नहीं होता।

(ग) 'फ्रेंच व्हाइट-लेड' (French white-lead)—सिरके में मारा हुआ मुर्दासंग और कारबोनिक एसिड गैस से मारा हुआ सीसा। इन दोनों का मेल रहता है मगर यह अच्छा नहीं होता।

(घ) 'हेम्बर्ग व्हाइट' (Hamburg white)—ख़ालिस सफ़ेदा १ भाग और खड़िया २ भाग। यह भी उत्तम होता है।

(ङ) 'वेनेटियन व्हाइट' (Venetian white)—ख़ालिस सफ़ेदा और खड़िया समभाग।

(च) 'मिनरेल व्हाइट' (Minarel white),

(छ) 'डर्बीशीयर व्हाइट' (Derbyshire white),

(ज) 'नाटिंघम व्हाइट' (Nottingham white)

(झ) 'स्पेनिश व्हाइट' (Spanish white)

(२) 'सलफेट आफ़ लेड' (Sulphate of lead)।

शोरे के तेज़ाब या सिरके के तेज़ाब में हलका गंधक का तेज़ाब मिला कर इस में मुर्दासंग गलाने से सफ़ेद बुकनी नीचे बैठ जाती है जिसे धो कर सुखा लेने से यह बनता है।

(३) चिनिया सफ़ेदा (Chinese white)—

ज़र्द मसाला।

(१) हरताल (Orpiment or King's yellow)।

(२) 'नेपल्ज़ यलो' (Naples yellow)।

(३) 'क्रोम यलो' (Chrome yellow)—नाइट्रेट आफ़ लेड या एसिटेट आफ़ लेड को पानी में घोल कर छान ले इसी प्रकार 'न्यूटरल क्रोमेट आफ़ पोटाश' को भी छान ले और दोनों को मिला दे, कुछ देर बाद नीचे गाद बैठ जायगी उसे निकाल कर मीठे पानी से धो कर सुखा ले।

काला रंग।

(१) काजल—हाथी दांत के बुरादे का हो या चिराग़ का।

आसमानी रंग।

(१) २ भाग फिटकरी में १ भाग कसीस मिला कर घुला ले। फिर 'यलो प्रशियेट आफ़ पोटाश' (yellow prussiate of potash)

के घोल में थोड़ा सा गंधक का तेज़ाब मिलावे। पहिले घोल में दूसरा घोल बूंद बूंद कर के डाले जब तक कि उस में गाद धीरे धीरे बैठती रहे। इस गाद को निकाल कर धो डाले और छान ले। यह प्रशियन ब्लू कहाती है।

(२) २ भाग गंधक और १ भाग कारबोनेट आफ़ सोडा (खुश्क) एक हांडी में रख कर आग पर रखें और हांडी ढांप कर इतनी आंच दे कि वह लाल हो जाय या पिघलना शुरू हो जाय तब उस में ७२ भाग सिलिकेट आफ़ सोडा और ७० भाग अल्यूमिनेट आफ़ सोडा मिला कर थोड़ा थोड़ा मिलावे! एक घंटा आग पर पड़ा रहने दे। इसे धो कर काम में लावे। यह अज्योर ब्लू या पेरिस ब्लू कहाता है।

(३) ३७ भाग चीनी मिट्टी (Kaolin), १५ भाग सलफ़ेट आफ़ सोडा, २२ भाग कारबोनेट आफ़ सोडा, १८ भाग गंधक और ८ भाग लकड़ी का कोयला, इन सब को खूब पीसे और एक में हल करे। एक बड़ी घरिया में रख कर २४ या ३० घण्टे तक तेज़ आग में रक्खे रहे। बाद में इस में से निकाल कर फिर उसे लोहे के बरतन में रख कर धीमी आंच पर तपाता रहे जब तक कि काफ़ी रंग न आ जाय। यह भी 'पेरिस ब्लू' कहाता है।

(४) ५ सेर पानी में १ औंस कसीस और ८ औंस फिटकरी घोले। इस में प्रशियट आफ़ पोटाश और पर्ल ऐश का घोल मिला देने से जो गाद बैठ जाय उसे निकाल कर साफ़ पानी में घोले यह 'स्याक्सन ब्लू' कहाता है।

सब्ज़ रंग।

(१) ज़ंगार (Verdigris)—

(२) ज़ंगार को उबलते हुए पानी में मिला कर पतली लेई बना ले और छान ले जिस में रंग का कोई ज़र्रा अगर हो तो निकल जाय। अब १० हिस्से पानी में १ हिस्सा आरसीनियस एसिड मिला कर उबाले और इस में पहिला मसाला थोड़ा थोड़ा कर के डालता जाय

और बिलोता जाय जब गाद गाढ़ी और दानेदार खूब हो जाय तब निकाल कर सुखा ले। यह 'एमेरेल्ड ग्रीन' कहाता है।

Pig-skin (पिग स्किन) - सूअर की खाल। इससे ज़ीन, जिल्द की चमड़ेदार दफ्ती, पोर्टम्यांटो वग़ैरा तयार किया जाता है।

Pimento (पिम्यण्टो)—पीमेंथे। यह एक खुश्बूदार फल है जो मसाले की तरह काम आता है इसमें लवंग, दालचीनी और जायफल की सी महक रहती है इसलिये इसे 'ऑल-स्पाइस' (Allspice) या 'जमैका पीपर' (Jamaica pepper) भी कहते हैं। Allspice देखो।

Pimpinella (पिम्पिनेला)—सौंफ, अनीसूं। इसी का अर्क बादियान या सौंफ का अर्क होता है। तबाबत में इसका बहुत इस्तेमाल होता है और अचार व गर्म मसाले में भी यह काम आता है। इसकी अच्छी खासी बिकरी होती रहती है।

Pinchbeck (पिंचब्यक —इसी नाम का एक मिलवां धातु हैं जो ५ भाग ताम्बा और १ भाग जस्ता मिलाकर तयार किया जाता है।

Pine (पाइन)—यह वृक्ष लगभग १०० क़िस्म का होता है, मगर हिन्दुस्तान में ५ क़िस्म का पैदा होता है।

(१) कैल, रैसाल, चिला, तोंगशी (P. Excelsa, Indian blue or fine-leaved pine)—इस में से तारपीन और टार (Tar) बहुत निकलता है, इस की लकड़ी मशाल की तरह बलती है इसलिए इसे 'मशाल' भी कहते हैं और पश्तो भाषा में 'जगनी' कहाती है। इस पेड़ में वंशलोचन की तरह की एक चीज़ सफ़ेद रंग की मीठी पैदा होती है और खाई जाती है। इस की लकड़ी देवदार से भी अच्छी होती है क्योंकि यह लकड़ी फटती नहीं और न देवदार की तरह इस में इतना ज्यादा तेल होता है कि उसमे में गर्द चिपक जाया करे। कांगड़ा की तरफ़ इस से टी-बक्स बनाये जाते हैं।

(२) गुनेबर, नेउर, रांगती (O. Gerardiana)—इस पेड़ का फल चिलगोजा है जिसे न्योजा भी कहते हैं। इस की लकड़ी सख्त

रोगनदार और देरपा होती है मगर इस के फल की आमदनी इतनी होती है कि लकड़ी के लिए पेड़ ज्यादा नहीं काटा जाता।

(३) दिंगसा, तिन्यू या तरू (O. Khasya)—इस की राल बड़े काम की चीज़ है। तारपीन भी इस की अच्छी होती है। यह पेड़ खासिया पहाड़ और चिटगांव की तरफ़ होता है।

तिमू, टेंइ (O. Merkusii)—यह पेड़ मर्तबान, टेनासिरम व रियासत शान की तरफ़ होता।

चीड़, शाल (O. Longifolia)—यह हिमालय में बहुत होता है। इसकी राल गंदाबिरोज़ा या चीड़ की गोंद कहाता है। देहरादून के मुहकमा जंगलात के Forest School Factory (कारख़ाना स्कूल जगलात) में इस से लगभग ९०० मन कालोफोनी (Colophony) याने चीढ़ की गोंद और लगभग १७०० गेलन तारपीन का तेल मालियति ९०००) का निकाला जाता है, इस में से टार (Tar) और पिच (Pitch) भी निकाला जाता है। यह सब कारोबार सरकारी इन्तज़ाम मे होता है।

Piney Varnish (पिने वारनिश)—सफ़ेद डामर, कहरूबा, सँदरस। इसे White Dammar of South India, Indian Copal or Malabar Tallow भी कहते हैं। Copal देखो।

Pine wax (पाइन व्याक्स)—कैल की मोम।

Pins (पिन्ज़)—पिन, आलपीन। यह सूई की तरह की तार होती है जिस का एक सिरा नोकीला और दूसरा घुंडीदार होता है। पिन काग़ज़, कपड़े वग़ैरा नत्थी करने के काम में लाई जाती है। इस के बनाने का कारोबार 'बार्मिंघम' (Birminghum) में ज्यादा है और लंडन, वारिंगटन और डबलीन में भी हैं।

बढ़ई के काम में गुल्ली या चूल को भी कहते हैं।

Pipe Clay (पाइप क्ले)—खरी मिट्टी, नमम मिट्टी। इस मिट्टी से तमाखू पीने की नुहनाल बनती है। इसका रँग सफ़ेद और यह लसदार मिट्टी होती है। यह मिट्टी डेवनशायर और कार्नवाल में ज्यादा पाई जाती

है। हिन्दुस्तान में यह ज्यादा नहीं पाई जाती अलबत्ता 'मिस्टर मूर' (Mr. Moor) साहब ने लिखा है कि मुक़ाम तेरानी और कारे के बीच में पाई जाती है और मद्रास के जँगलों में भी मिलती है।

Pistacho de terre (पिस्टाशो डि टेरा)—मूंगफली। Ground Nut देखो।

Pistacho Nuts (पिस्टाशो नट्स)—पिस्ता। इसकी ढेड़ीं (Gallo) को गोज़ धँज और इसके गोंद को कुंजद, बंजद, या कर्र कहते हैं। यह मशहूर मेवा अफ़गानिस्तान, खुरासान वग़ैरा की तरफ़ से आता है।

Pita (पिटा)—एक क़िस्म के पेड़ का रेशा। रामबांस, हार्थाचिंघार और सोंसल के रेशों को भी कहते हैं।

Pitch (पिच)—पिच। यह एक काले रंग की ठोस, चोट से चटक जानेवाली चीज़ है जो लकड़ी या कोल-टार में से निकाली जाती है हड्डी के टार और स्टीअरीन' (Stearin) की गाद में से जो पिच निकलती है वह कुछ नर्म होती है इस लिए वारनिश तयार करने और तिरपाल (Tarpaulin) बनाने के लिए इस की बहुत मांग रहती है। लकड़ी में का पिच (Wood tar pich) लोहे पर लगा देने से उस पर ज़ंग नहीं लगता और बांस या लकड़ी पानी से सड़ती गलती नहीं और न उन में दीमक वग़ैरा लगते हैं। कोल-टार में से जो पिच निकलता है वह गोहरी या कोयले की तरह ईंधन की जगह जलाई जाती है। रूस और फ्रांस की तरफ़ पिच बहुत बनाई जाती है।

इसी नाम का एक पेड़ भी न्यूज़ीलैंड में होता है जिसे Pitch wood, Cowrie, Kaurie or Dammar Australis कहते हैं। यह जहाज़ के काम की लकड़ी है। कूएं में ज़मीन में गाड़ने पर भी जल्दी सड़ती गलती नहीं।

Pitch, Burgundy (बर्गंडी पिच)—यह पिच Abies Excelsa नामक पेड़ की राल या गोंद है और दवा में इस का ज्यादा इस्तेमाल होता है।

Pitch blende (पिच ब्लेंड)—एक प्रकार का भूरे या मखमली स्याह रंग का खनिज पदार्थ है जिस में कुछ कुछ चमक रहती है और चांदी या सीसे के धातुमूल में पाई जाती है। इस में 'प्रोटोक्ज़ाइड आफ़ यूरेनियम' (Protoxide of Uranium) का भाग ज्यादा होता है अगर चूना कर के तेज़ाब में डाला जाय तो घुल जाता है।

Plantain (प्लानटेन)—केला। यह सुन्दर पेड़ हर जगह होता है मगर खास कर के बंगाल, आसाम व बर्म्हा में बहुत ज्यादा और बहुत स्वादिष्ट होता है। इस की लगभग ९५ क़िस्में हैं। चन्द मशहूर खाने लायक़ केलों के नाम यह हैं—

(१) ढाकाई मर्तबान (२) अनूपम या सफ़री (३) अमृत सागर (४) दूध सागर (५) बाघनली (६) कानाई बंशी (७) मोहन बंशी (८) अग्नेश्वर (९) चीन चम्पा (१०) जहाज़ी (११) चम्पा (१२) राम केला, इन के अलावा बाकी ज्यादा मीठे नहीं होते अलबत्ता चन्द क़िस्में सिलोन में की हैं जो मीठी होती हैं जैसे (१) पुष्प कदली (२) कोली कोटा (३) सुवन्देल (४) नवारी (५) रोटोहोनंरावला। बाज़ क़िस्म के केले पका कर बतौर तरकारी के खाते हैं।

इस पेड़ के तनों में से अब रेशे निकाले जाने लगे हैं जिन से रस्से, चटाई व टाट बनाये जाते हैं, उस से काग़ज़ भी बन सकते हैं।

केले के पेड़ ही की तरह और जाति का एक पेड़ अब फिलीपाइन टापू से लाकर कई जगह लगाया गया है उस में से रेशे बहुत निकलते हैं। यही रेशे 'मनीला हेम्प' (Manila Hemp) कहाते हैं। इस के रेशों की बहुत मांग इंगलैंड और युनाइटेड स्टेट में रहती है। लगभग दस लाख गांठ सालाना इस की उक्त दोनों देश में जाया करती है। मनीला रेशे के पुराने रस्से वग़ैरा से ही मशहूर काग़ज़ 'मनीला पेपर' तयार होता है। इस के रेशों की बहुत मांग विदेशों में रहती है और विलायत में इस के रेशों का भाव २१७) से ९००) तक फ़ी टन का रहता है। यह व्यापार करने लायक़ है और पहाड़ों पर यह पेड़ लगते हैं।

Plaster of paris (प्लास्टर आफ़ पेरिस)—प्लास्टर आफ़ पेरिस। एक क़िस्म की सफ़ेद मट्टी जो सीन नदी की तह में से निकलती है। अब कुलनार (Sulphate of lime) से भी तयार की जाती है। ठप्पा या सांचा बनाने के लिए यह बहुत काम आती है। हिन्दुस्तान में संगे जराहत, कुलनार, सुरमा सफेद इत्यादि नाम की जो चीज़ है उनसे भी प्लास्टर आफ़ पेरिस बन सकता है।

Plate of glass (प्लेट आफ़ ग्लास)—कांच की टट्टी। Glass देखो।

Plate powder (प्लेट पौडर)—मामूली रूज (rouge) और बारीक पीसी व छनी खड़िया से तयार किया हुआ 'प्लेट पौडर' आम तौर पर मिलता है। चांदी और सोने की चीज़ पर मल देने से उनमें चमक आ जाती है। दूसरी क़िस्म का यही मसाला १ भाग पारा और १२ भाग खड़िया से तयार होता है। गो इस से चमक ख़ास कर के चांदी की चीज़ पर ज्यादा आ जाती है मगर इस से चांदी घिसती बहुत है बलके यूं कहना चाहिए कि वह चांदी को खा जाता है।

नुस्खे—(१) खड़िया और उड़ाया हुआ सबकारबोनेट आफ़ आयर्न।

(२) ½ औंस पारा और २ औंस तयार की हुई खड़िया। स्पिरिट आफ़ वाइन के साथ नर्म चमड़े से रगड़ कर साफ़ करे।

(३) थोड़ा सा 'सलफ़ेट आफ़ आयर्न' (Sulphate of iron) लेकर तमाखू पीने के पाइप में भर कर आग में रख दो, पाव घण्टे की आंच खा लेने पर निकाल कर पीसी खड़िया मिला लो और सूखी ही काम में लाओ।

(४) ३ या ४ ड्राम 'सायनाइड आफ़ पोटाशियम' (Cyanide of potassium), ८ से १० ड्राम 'नाइट्रेट आफ़ सिलवर' (Nitrate of silver) को ४ औंस पानी में घोल कर नर्म ब्रुश से लगाओ और और साफ़ पानी से खूब धोकर कपड़े से पोंछ लो। यह सब से उमदा नुस्खा है इस से माल नहीं घिसता या छीजता।

(५) ४ औंस स्पिरिट आफ़ टरपेंटाइन, २ औंस स्पिरिट आफ़ वाइन, १ औंस स्पिरिट आफ़ क्याम्फ़र और ½ औंस स्पिरिट आफ़ अमोनिया ½ सेर खूब बारीक तयार की हुई खड़िया मिला लो। इस लेई को चांदी की तश्त इत्यादि चीज पर पोत दो और सूख जाने दो, फिर ब्रश से साफ़ कर के गद्दी से रगड़ कर साफ़ कर लो। यह सब से उमदा नुसखा है।

Platinum (प्लाटिमम)—प्लाटिनम। यह एक नई क़िस्म की धातू है। इस का रंग दुधिया सफ़ेद होता है। जिस धातु-मूल से यह निकलता है उस में और भी कई तरह के धातु जैसे 'इरीडिम', 'आरमीयम', 'पलाडियम' इत्यादि मिले रहते हैं। यह धातु-मूल खास कर के यूराल पहाड़ में पाया जाता है। शोरे और नमक के तेज़ाबों में कई बार डालने से अन्य अन्य प्रकार के धातू गल जाते हैं और प्लाटिनम निकल आता है। प्लाटिनम समस्त धातुओं से भारी होता है। जिस तरह सोने पर कभी दाग़ नहीं पड़ता वैसेही प्लाटिनम पर भी मौसिम का असर नहीं पड़ता। यह धातु सख्त है और इस की तार भी बन सकती है। रासायनिक पक्ष और विद्युत पक्ष में यह बहुत काम देता है। अब फ़ोटोग्राफ़ी में भी काम आने लगा है। यह धातु बहुत कम पाया जाता है इस से महंगा मिलता है।

Plumbago (प्लम्बेगो)—Blacklead देखो।

Podophyllin (पोडोफ़ाइलिन)—पित पापड़ा, बनककड़ी, भवन बाकड़ा। यह एक तरह की गोंद या राल है। फेफड़े की बीमारी में यह बहुत फ़ायदा करता है। इस का कसाव अगर निकाल कर उस का व्यापार किया जाय तो फ़ायदा हो। यह पेड़ शिकिम से शिमला तक, हज़ारा, तिब्बत व काश्मीर में बहुत पाया जाता है। इस पेड़ को Mayapple, Duck's foot, American Mondrake भी कहते हैं।

Pomegranate (पोमिग्रानेट)—अनार। सुलैमान पहाड़ में इस के जंगल के जंगल खड़े हैं। इस का रस तरी देने वाला है। हिन्दुस्तान में अमीर लोग इसे बड़े चाव से खाते हैं। इस के फूल या छिलके से

जो नासपाल कहाता है, कपड़ा रंगते हैं। छिलके से कसाव भी निकलता है। यह कई क़िस्म का होता है खटा, मीठा, बीजू, बेदाना, काग़ज़ी इत्यादि। इस का बहुत व्यापार अन्य मेवों के साथ होता है। इस की लकड़ी किसी काम में नहीं लाई जाती मगर गेम्बल साहब के कथनानुसार यह बतौर 'बाकस उड' के काम में लाई जा सकती है।

Pomelo (पोमेला)—Shaddock देखो।

Poplin (पॉपलिन)—पुपलीदार या डोरीदार कपड़ा। यह एक क़िस्म का कपड़ा है जिस का ताना रेशम या बारीक सूत का होता है और बाना ऊनी या सूत का, देखने में ऐसा मालूम देता है कि सिरकी के टट्टर की तरह सिरकियां या डोरियां बिनी गई हैं। यह कपड़ा मनचेस्टर और 'लायन' (Lyons) नगर में बहुत बिना जाता है।

Poppy (पॉपी)—पोस्ते का पेड़, पोस्ता। यह २० क़िस्म का होता है लेकिन सब से ज्यादा ज़रूरी पेड़ वह है जिस में से अफ़ीम पैदा होती है। पोस्ते के दाने का हलुआ बनता है और मिठाइयों में मिलाया जाता है और उस में से तेल भी निकाला जाता है। जो हलके सुनहरे रंग का या दुधिया ज़र्द रंग का होता है और पेन्टिंग में काम आता है और इस से साबुन बहुत बनाया जाता है। इस की काश्त लगभग साढ़े तीन लाख एकड़ में बिहार व बनारस की एजन्सी अफ्यून में होती है। सन १९०८-९ में पोस्ता ८३.०१ लाख रुपये का और सन १९०९-१० में ८०.९१ लाख रुपए का यहां से चलान हुआ।

Porcelain (पोर्सिलेन)—चीन के बरतन, मिट्टी के रौग़नी बरतन। सफ़ेद रंग की साफ़ चीनी मट्टी (Kaolin) से बनाये जाते हैं। इन की बिकरी इस देश में भी खूब होती हैं, विदेशों से लगभग ४३.५ लाख रुपये के हर साल आया करते हैं। यह व्यवसाय करने योग्य है। हिंदुस्तान में इस के बड़े कारखाने सन १९०८ में ४ थे लेकिन सन १९०९ में ५ होगये।

Porcupine quils (पॉक्यूपाइन क्विल्ज़)—साही या स्याही का कांटा। यह एक क़िस्म का जानवर है जिस के बदन पर बड़े बड़े और चोखे स्याह व सफ़ेद रंग के सुन्दर कांटे होते हैं। इस के कांटे को सन्दूक़चे वग़ैरा पर मढ़ कर खूबसूरत चीज़ें बनाते हैं।

Porpois (पॉरपॉयज़)—एक क़िस्म की समुद्र की मछली। इसमें से तेल निकलता है और इसकी खाल से चमड़ा भी बनता है जो गाड़ियों पर मढ़ा जाता है।

Port Wine—पोर्ट वाइन। यह लाल रंग की मशहूर शराब है। यह कई बरसों के बाद पीने के काम की होती है।

Porter (पोर्टर)—यह एक क़िस्म की घटिया शराब है जो बीयर की तरह तयार की जाती है।

Potash (पोटाश)—पोटाश, झाड़ का नमक, जवाखार। खास क़िस्म के वृक्षों और पौधों की राख से निकलता है। इन राखों को पानी में घोल कर आंच पर उड़ाने से मटमैली सफ़ेद रंग की खार निकल आती है और इसे भी तपाकर मैल जला देने से सफ़ेद रंग की खार निकलती है जिसे 'पर्लएश' (Pearlash) कहते हैं। और इसी पर्लएश को और साफ़ कर लेने पर Sal tartar हो जाता है। इसे और भी साफ़ व सफ़ेद कर लेनें पर वही 'रिफाइंड पर्लएश' (Refined pearlash) कहाती है। कपड़ों पर के धब्बे और मैल साफ़ करने के काम में 'पोटाश' और 'पर्लएश' दोनों लाये जाते हैं और साबुन बनाने में यह ज़रूरी चीज़ है। इसी से 'कास्टिक सोडा' (Caustic Soda) बनाया जाता है। इस खार से कई तरह के नमक तयार होते हैं जो दवा के काम आते हैं। हिन्दुस्तान के जिन पेड़ों से क्षार निकलती है वह यह हैं।

(१) चिरचिरा या अपामार्ग	(५) कठ करंज
(२) अरूसा या वासक	(६) अमलताश
(३) सतपर्णी, सतवन	(७) ढाक या पलाश
(४) चौलाई	(८) ढोल ढाक

(९) देवदार	(१५) पपीता
(१०) मदार	(१६) साल
(११) इन्द्रजौ	(१७) लोध
(१२) जौ	(१८) बहेड़ा
(१३) कनेर	(१९) सम्भालू
(१४) घीया तरोई	(२०) तिल वग़ैरा

Potash water (पोटाश वाटर)—पानी में पहिले बाईकारबोनेट आफ़ पोटाश. को प्रयोग करके तब उसमें कारबोनिक एसिड ग्यास का मेल दिया जाता है ।

Potassa (पोटाशा)—व्यपारिक भाषा में इस के कई नाम हैं, जैसे 'अलकली' [alkali], 'साल टारटार' [sal tartar], 'पर्लएश' [pearlsah], 'पोटाश' [potash] और 'हाइड्रेटेड प्रोटोक्ज़ाइड आफ़ पोटाशियम्' [hydrated protoxide of potassium] झाड की खार । Potash देखो ।

Potassium (पोटाशियम्)—पोटाशियम । कारबोनेट आफ़ पोटाश और लकड़ी के कोयले को मिलाकर डिस्टिल करने याने भभके द्वारा टपकाने से तयार होता है ।

Potatœ (पोटाटो)—आलू, बटाटा । यह तरकारी अब बारहों महीने खाई जाती है। पहिले आलू हिन्दुस्तान में नहीं होता था । योरोप में यह पहिले पहिल सन् १५८० में लाकर बोया गया । हिन्दुस्तान में इस के बोने का ज़िक्र सर टामस् रो ने सन् १६१५ में किया था, इस के पहिले आलू के बाबत कोई पता नहीं लगता । उस ज़माने में यह सूरत और करनाटक के दो चार बाग़ों में बोआ जाता था । अब तो इस की काश्त हर सूबों में होती है। यह बारहों महीने मिलता है । प्रायः तीन क़िस्म के आलू हिन्दुस्तान में बोए जाते हैं ।

(१) सफ़ेद आलू या मद्राजी आलू ।
(२) लाल या देशी आलू ।
(३) पहाड़ी आलू ।

याद रहे कि आलू की ५०० क़िस्में हैं। आलू का नशास्ता भी बहुत निकाला जाता है और कपड़ों पर मांड़ी देने के लिए बहुत काम में लाया जाता है और 'फ़रीना' (Farina) कहाता है। आलू की शराब भी चुआई जाती है जो 'पोटाटो ब्रांडी' (Potato Brandy) कहाती है।

Potstone (पॉटस्टोन)— Steatite देखो।

Pottery (पॉटरी)—कुज़ागरी, मिट्टी के बरतन बनाना, कुम्हारी। मट्टी की चीज़ें कई क़िस्म की मट्टियों से बनाई जाती हैं। उमदा मट्टी की चीज़ों पर रंग रौग़न लगा कर उन पर बेल बूटे भी बनाए जाते हैं। ईंटा, खपड़ैल, मट्टी की हांड़ी और खिलौने वग़ैरा भी इसी में शामिल हैं। हिन्दुस्तान में भी कई तरह की मट्टी इस काम में आती है। जैसे चिकनी, चिकिटा, काली मट्टी, नलुन, जसवर, मुलतानी मट्टी, पोतनी मट्टी, आतशी मट्टी (Fire Clay), खरी (Pipe Clay), काली मट्टी, बन्नी या गेरुई (Red Earth) इत्यादि।

अब तो चीनी के बरतन की मट्टी (Koalin or China Clay) भी मिलने लगी है जिस की चीज़ें 'पोर्सलेन' (Porcelain) कहाती हैं।

मट्टी के बरतन हिन्दुस्तान में गांव गांव में बनते हैं और बिकते हैं फिर भी विलायतों से हर साल बहुत आया करते हैं।

सन् १९०६-७ में ३८,९९,८२४) के और सन १९०९-१० में ४३.५७ लाख रुपये के आए।

नए तरीक़ों से ईंट, खपड़ैलें और मट्टी की चीज़ें बनाने के कई कारखाने रानीगंज, जबलपुर, अलीगढ़, बरैली, मंगलोर वग़ैरा जगहों में खुल गए हैं। लेकिन रानीगंज का कारखाना बहुत बड़ा है जिस में लगभग १४०० आदमी काम करते हैं। सन १९०९ में ५ कारखाने यहां थे।

Precious Stone (प्रेशस स्टोन्ज़)—जवाहरात, रत्न। हिन्दुस्तान में (१) हीरा, (२) मानिक, (३) नीलम, (४) लालड़ी, (५) तुरमली, (६) पुखराज, (७) चुनरी (८) संगे यशब, (९)

लहसुनिया, (१०) सबज़ा, (११) पन्ना, (१२) मोती, (१३) फ़िरोज़ा, (१४) नीलवर्ण, (१५) लाजवर्द, (१६) दौल दिली, (१७) मनका, (१८) अक़ीक़, (१९) ज़बर्जद, (२०) मूंगा इत्यादि कई जवाहिर मिलते हैं।

हिन्दुस्तान में क़ीमती पत्थर ८४ तरह के माने जाते हैं जिन को चौरासी संग कहते हैं जिन में से बीस नाम ऊपर गिनाए गए हैं जो बतौर जवाहिर के ज़ेवरात में जड़े जाते हैं, उन के अलावा बाक़ी क़ीमती संग यह हैं:—

तामड़ा, बैरुज, टप्पस, सुनैला, धुनैला, कटैला, करकेतक, कांसला, सिंधुरिया, नीली, बिल्लौर, गोदन्ती, सिंघला, पनघन, तुरशावा, दहाने फ़िरंग, सुलैमानी, अलैमानी, मरगज, ग़ोरी, कसौटी, टेढ़ी, सूसा, कलवा या भैंसा, पितौनिया, ज़हरमोहरा, मारमोहरा, तिलर, सिमाक़, गुदड़ी, अबरी, परका, जसपर, मरियम, हदीद, पिस्ता, रतवा, बादल, जलैमानी, हट्टू, अज़ूबा, खंदारी, खट्टू, दुधिया, गंदुमा, हाडिया, काशग़री, खारी, संगमरमर, लरज़ा, सुरमा, संगजेराहत, तारा, साफ़ी, घेरा, आतश, चक़माक़, बांसी, बसरी, हज़रत लहूद, संगनर्म, अफ़्ल, कुरंड व सोना मक्खी।

Prepared Chalk (प्रिपेअर्ड चाक)—सिरे की खड़िया। खड़िया को बारीक पीस कर पानी में घोल दे कुछ मिनिट बाद जब दर्रे बैठ जायं तो पानी को अलग बोतल में उंडेल ले। अब इस का जो बारीक गाद नीचे बैठ जाय उसे निकाल कर सुखा ले यही सिरे की खड़िया है।

Printing Ink (प्रिंटिंग इंक)—छापे की स्याही। यह खास तरीक़े से काजल और अलसी के तेल से तयार की जाती है। टाइप के अक्षर छापने की और लिथोग्राफ़ी पर छापने की स्याही जुदी जुदी होती हैं।

यह छापने की स्याही अलसी के तेल से बनती है। तेल इतना जलाना पड़ता है कि उस में ज्वाला बल उठे। ज्योंही तेल बलने लगे त्योंहीं तेल को हांड़ी पर का ढकन ढांप कर ज्वाला बुझा दे। ६० छिटांक तेल में (जब फेन उठना बंद हो) तब ३ सेर काला रजन मिलावे,

जब यह गल कर घुल जाय तब लगभग १ सेर उमदा साबुन की कतली थोड़ा थोड़ा मिलावे क्योंकि वह छौंकती है, इन्हें खूब घोल ले और आंच पर एक जान कर ले । ढाई औंस नील और उतना ही प्रशियन्‌ब्लू, २ सेर मिनरल काजल, पौने दो सेर काजल मिले तेल में गर्म गर्म वारनिश मिलाई जाय, फिर इन सब को खरल में रगड़ कर हल करे । यह रोशनाई क़ई रंग की लाल, नीली, पीली, हरी इत्यादि अनेक मसाला मिलाकर बनती है ।

लिथोग्राफी की स्याही में भी तेल की वारनिश ऐसी तयार करनी पड़ती है कि तेल बल उठे। इस तेल को बलने देते हैं और जितना गाढ़ा करना होता है कर लेते हैं; बंद जगह में यह वारनिश न पकाई जाय। फुकी हुई 'परिस ब्लाक' (Calcined Paris black) मिला कर या उमदा काजल मिला कर हल कर ले ।

Prussian Blue (प्रूशियन ब्लू)—प्रूशियन ब्लू । 'यलो प्रूशिएट आफ़ पोटाश' (Yellow prussiate of potash) और कसीस मिला कर तयार किया जाता है । जिस से गहरे नीले रंग की गाद जम जाती है । यह रंगने के काम में लाया जाता है ।

(१) १ हिस्सा कसीस में २ हिस्सा फिटकरी मिलाकर कॉफ़ी पानी में घोले । यलो प्रशियेट आफ़ पोटाश अलग पानी में घोलकर उस में थोड़ा सा गंधक का तेज़ाब डाले । इन दोनों को एक में मिलाने से गाद बैठने लगेगी । गाद को धो डाले और सुखा ले यही 'प्रूशियेट ब्लू' है ।

(२) रेड प्रशियेट आफ़ पोटाश के घोल में हीरा क़सीस पानी में घुली हुई मिलाने से भी यह तयार होता है । इसे भी धोकर सुखा ले ।

Prussic acid (प्रूसिक एसिड)—प्रूसिक एसिड । इसका दूसरा नाम 'हाइड्रोसायनिक एसिड' [Hydrocyanic acid] भी है। यह ज़हरीली चीज़ है और दवा में काम आती है ।

Pulses (पलसेज़)—फलदार अनाज । जैसे, मटर, लोबिया, मोथ इत्यादि ।

Pumelnose—Shaddock देखो।

Pumice Stone (प्यूमिस स्टोन)—झांवां। यह लिपरी (Lipari) टापू में बहुत पाया जाता है और वहीं से ज्यादा चलान होता है। लकड़ी, धात, कांच, संगमरमर वग़ैरा पर इस से रगड़कर पॉलिश करते हैं।

Purpurine (परप्यूरीन)—आल की जड़ में से एक क़िस्म का रंग निकलता है। आल की जड़ को फिटकरी के पानी में उबालने और फिर गंधक के तेज़ाब के प्रयोग देने से 'परप्यूरीन' नाम का रंग निकल आता है इसे अलकोहल में घोलकर सुखा लेने से लाल लाल क़लमें इसकी जम जाती हैं।

Purree (प्यूड़ी)—प्योड़ी रंग। यह ज़र्द रंग है जो मवेशियों को आम की पतियां खिला कर उस के पेशाब से बनाया जाता है।

Putchuk (पाचक)—पाचक, कुट। यह पेड़ काश्मीर और चनाब व झेलम के बीच हिमालय पहाड़ में होता है। इस की जड़ चोबे कुट के नाम से मशहूर है। यह सुगंधित होती है, कपड़ों में रखने से कीड़े नहीं लगते। कहा जाता है कि बाल में लगाने से सफ़ेद बाल काले हो जाते हैं। चीन में इस की बहुत मांग रहती है। काश्मीरी लोग इसे शालों की गठरी में रख देते हैं जिस से उन में कीड़े नहीं लगते।

Putty (पुटी)—पुटिन, पोटीन। खूब बारीक पीसी और छनी खड़िया को अलसी के तेल में गूंध कर तयार की जाती है। इस में थोड़ा सफ़ेदा भी मिलाया जाता है। रंग मिला के रंगीन भी बनाई जा सकती है।

(१) नर्म पोटीन—५ सेर तयार की हुई बारीक खड़िया और $\frac{१}{२}$ सेर सपेदा को उबाले हुए सलसी के तेल में गूंधे। इस में $१\frac{१}{४}$ छिटांक 'सालेड आयल' (Salad Oil) मिला देने से पोटीन हमेशा नर्म बनी रहेगी।

(२) सूखी पोटीन नर्म करना—१ रतल 'अमेरिकन जवाखार' (Pearlash) और ३ रतल पत्थर का चून बिना बुझा हुआ लो। चूने को पानी में

बुझा कर जवाखार मिलाओ। इसे पोटीन पर लेप देने से १२ घण्टे में पोटीन इतनी नर्म हो जायगी कि कांच की टट्टी सहज में छूट जायगी।

Putty-powder (पुट्टी पौडर)—यह सफ़ूफ़ Oxide या Dioxide of tin है जो पत्थर या कांच पर पालिश देने के काम आता है। सफ़ेद Enamel (मीना या रौग़न) भी इस का बनता है। इस से दूरबीनों के ताल भी जोड़े जाते हैं।

Pyrites (पाइराइट्स)—जिस धातु-मूल में गंधक़ या संखिया का लाग या मेल रहता है उसे पाइराइट कहते हैं। यह 'आयरन पाइराइट' (Iron Pyrites) यानें लोह-माक्षी के रूप में बेहद पाया जाता है और इसी से गंधक का तेज़ाब ज्यादा तयार किया जाता है। इसी तरह ताम्बे का एक धातु-मूल 'कापर पायराइट' (Copper pyrite) है।

Pyroligneous acid (पाइरोलिगनिअस एसिड)—यह सिरके के तेज़ाब (Acetic acid) की एक क़िस्म है जिसे 'उड विनेगर' (Wood vinegar) भी कहते हैं। यह लकड़ियों का खमीर उठा कर बनता है। इसे बहुत कुछ साफ़ कर के काम लायक़ बनाते हैं।

इस के तयार करने में इसे भबके द्वारा चुआते वक़्त इस में से 'पाइरोज़ालिक स्पिरिट' (Pyroxalic Spirit) या 'उड नफ़था' (Wood Naphtha) निकलता है। इस में तेल या राल घुल जाती है इसलिए वारनिश बनाने के काम आता है।

Pyroxylin (पाइरोज़ाइलिन)—Gun Cotton देखो।

Q.

Quartz (क्वार्ज़)—नगीने के संग, बिल्लूर। जिस पत्थर में सिलिका या बालू का मेल ज्यादा हो उसे 'क्वार्ज़' कहते हैं। यह कई रंग का होता है, जैसा जैसा मेल उस में हो वैसी ही रंगत उस में आ जाती है। यह पत्थर तीन तरह का गिना जाता है:—

(१) बिल्लूर, बिलौर (Rock Crystal)।

(२) बे कनी के संग (Uncrystallized or Crypto-Crystalline anhydrous quartz) जैसे संग यशब, हौलदिली।

(३) (Uncrystallized hydrated quartz) जैसे ओपल।

बिल्लौर की कई क़िस्में हिन्दुस्तान के प्राचीन ग्रन्थों में मानी जाती है जैसे सूर्यकान्त व चन्द्रकान्त व नीरकान्त (यह तीनों नापैद हैं), शुक्र ज्योति (जो पानी में डालने से एक रंग हो जाय), राजवर्त (लाल रंग कमलवत), राजमय (जिस में नीली छाया हो), ब्रह्ममय (जिस के गिर्द सूत्रवत चिन्ह हो), तैलाख्य (आकाशवत् स्वच्छ हो और जिस रंग के साथ हो वही रंग ग्रहण करे), हंसगर्भ।

Quebracho (क्वेबराचो)—यह एक क़िस्म के पेड़ की छाल है जिस में से चमड़ा पकाने के कसाव (Tannin) निकलता है।

Queen's Metal (क्वीन्ज़ मेटल)—एक क़िस्म की फूल की सी धात है। ९ भाग रांगा, १ भाग अण्टीमनी, १ भाग सीसा और १ भाग बिस्मथ मिला कर यह बनता है। इस धातु से सस्ते चम्चे, सुराही, वग़ैरा कई तरह की आरायशी चीज़ तयार की जाती हैं।

(२) १०० भाग रांगा, ८ भाग रेगूलेस आफ़ अंटीमनी (Regulus of Antimony), १ भाग बिस्मथ और ४ भाग ताम्बा मिलाने से तयार होता है। और भी कई नुसखे हैं।

Quercitron (क्वरसिटरन)—अमेरिकन सागौन। यह एक क़िस्म का सागौन है जो अमेरिका में होता है जिस की छाल से चमड़ा पकाने का कसाव बहुत निकाला जाता है और उस में से एक प्रकार का ज़र्द रंग भी निकलता है। इस की लकड़ी बहुत मज़बूत होती है और जहाज़ तयार करने में लगाई जाती है। इस पेड़ का नाम Quercus Tinctoria है।

Quicklime (क्विकलाइम)—कलई का चूना, कली का चूना। Lime देखो।

Quicksilver (क्विकसिलवर)—Mercury देखो।

Quills (क्विल)—क्विल, पर का क़लम। कई पक्षियों के डैने का पर अंगरेज़ी क़लम बनाने के लिए इस का व्यापार होता है।

Quina (क्विना)—Cinchona देखो।

Quinine (क्विनाइन)—कुनैन। सिंकोना नामक (Cinchona) पेड़ की छाल से कुनैन तयार की जाती है। इस के पेड़ कई तरह के होते हैं, किसी की छाल गुलाबी, किसी की ज़र्द इत्यादि। कुनैन तयार करने की सरकारी फ़ैक्टरियां मद्रास और बंगाल में हैं। सन् १९०६-७ में ७१२३७ रतल कुनैन ६२८४३० रु० की बेची गई। कुनैन तो काम में कम लाई जाती है पर इस के कई तरह के खार या नमक ही ज्यादातर काम आते हैं, खास कर के सलफ़ेट आफ़ कुनैन (Sulphate of Quinine) बहुत इस्तेमाल होता है। इस के पेड़ नीलगिरी पहाड़, मालाबार, मैसूर, कुर्ग वग़ैरा में पैदा होते हैं। इन के बाग़ात सूबा बंगाल में १८०० एकड़, सूबा मद्रास में ३२९३ एकड़ और कुर्ग में १७३ एकड़ के लगभग हैं। हिन्दुस्तान में ख़पने के अलावा लगभग ३२ या ३३ लाख रतल कुनैन विदेशों को रवाना होती है पर अब आगे से कम चलान की जाने लगी है क्योंकि हिन्दुस्तान में इस की खपत अब हर साल बढ़ती जाती है।

कुनैन बनाने की १८ फ़ेक्टरियां कुल दुनिया में हैं:—

फ्रांस में ५, अमेरिका में ४, इंगलैंड में ३, हिन्दुस्तान में २, जरमनी में २, हालैंड में १ और जावा में १। इस का बहुत बड़ा कारोबार अमस्टर्डन में होता है।

Quinquina (क्विनक्विना)—Cinchona देखो।

R.

Rabbits (रैबिट)—ख़रगोश, खरहा । इन की खाल और इन के रोयें कई काम आते हैं। खाल से पोंस्तीन, दस्ताने वग़ैरा बनते हैं। इंगलैंड में इन की मांग बढ़ती जाती है। न्यूज़ीलैंड और आस्ट्रेलिया में इन की खालें बहुत चलान होने लगी हैं।

Racoon (रैकून)—यह एक क़िस्म का छोटा भालू की तरह का पशु है जो केवल युनाइटेड स्टेट और कनाडा में पाया जाता है। इसकी खाल की मांग और चलान इतनी बढ़ गई है कि यह जानवर लगभग नेस्तोनाबूद हो चला था। अब क़ानून द्वारा इसकी हिफ़ाज़त की जाती है और खास खास अय्याम में इनका शिकार खालों के लिए किया जाता है।

Radish (रैडिश)—मूली। यह कच्ची भी खाई जाती है और इसकी भाजी भी बनती है। पानी में उबालने पर इस के जड़ और बीजों से तेल निकाला जाता है। चीन में एक क़िस्म की ऐसी मूली बहुत बोई जाती है जिसकी जड़ में से तेल बहुत निकलता है। मूली कई क़िस्म और जाति की होती है।

Rags (रैग्ज़)—रैग्ज़, गूदड़, रुई या सूत या ऊन के गूदड़। इन गूदड़ों से कई चीज़ें बनाई जाती हैं। गूदड़ का एक अच्छा खासा व्यापार है। शाणिक (Linen) और सूती गूदड़ों से उमदा क़िस्म के काग़ज़ तयार किए जाते हैं। ऊनी गूदड़ से 'शोडी' (Shoddy) नामक ऊनी कपड़ा तयार किया जाता है जिसे ग़रीब लोग शीत देश में पहिनते हैं। बारीक ऊन के गूदड़ों से दीवारों पर मढ़ने का काग़ज़ जो 'फ्लाक पेपर' (Flock-paper) कहाता है, बनता है। अमेरिका में इस काम के करने वाले करोड़पती तक हो गये हैं।

Rails (रेल्ज़)—लोहे या स्टील की रेलें या कटहरे। इन के तयार करने का कारोबार बेलजियम में बहुत होता है। कटहरे ढालने के छोटे छोटे कई कारखाने हिन्दुस्तान में भी हैं।

Rapeseed (रेपसीड)—सरसों, लुटनी, तोरी। तेल निकालने के लिए इनकी बहुत मांग रहती है। हिंदुस्तान में इसकी खेती लगभग ५०,००,००० एकड़ में होती है। केवल संयुक्त प्रान्त ही में इसकी काश्त का रक़बा लगभग ३२,१०,००० एकड़ सन १९०६-७ में था और पैदावर ५,८३,००० मन की हुई थी। इस की काश्त मिलवां याने दूसरे गले के साथ भी की जाती है और बेमिलवां भी बोई जाती है, उनका अलग अलग ब्योरा दो साल का दिया जाता है, जिस से इस की काश्त और पैदावार का हाल बखूबी मालूम हो जायगा।

रक़बा	सन १९०९-१०	सन १९१०-११	
बे मिलवां काश्त	१७६९१४	१४६१३७	एकड़
मिलवां काश्त	२२६९०००	२३७१०००	"
मीज़ान	२४४५९१४	२५१७१३७	"
पैदावार			
बे मिलवां	१००८०००	९५२०००	मन
मिलवां	१३०४८०००	१५७०८०००	"
मीज़ान	१४०५६०००	१६६६००००	मन

सरसों व तोरी वग़ैरा हर साल बहुत हिन्दुस्तान से जहाज़ों पर लदकर बाहर चली जाती है। इसका ब्योरा तीन साल का नीचे दिया जाता है:—

सन १९०७-८ में	४,३२,५६,००० रू०	७४८०२००	मन
" १९०८-९ में	२,३६,९३,००० "	३८७२४००	"
" १९०९-१० में	४,६८,२२,००० "	९२८०६००	"

सन १९०८-९ में चलान की तायदाद इसलिए कम है कि उस साल बहुत बड़ा अकाल पड़ गया था, पैदावर बहुत ही कम हुई।

कुल हिन्दुस्तान की पैदावर का तखमीना सन १९०७-८ का ६,८३,००० टन याने १,८१,२४,००० मन का था जो मामूली पैदावार से बहुत कम है मगर सन १९०८-९ में पैदावार का तखमीना ९,८७५०० टन याने २,७५,५०,००० मन किया गया था और सन १९०९-१० में १२,२२,७०० टन याने ३,४२,३५,६०० मन।

विदेशों में जाकर इस से तेल निकलता है। तेल पेर लेने के बाद जो फोक बच रहता है उसे 'खली' कहते हैं। यह मवेशियों को खिलाई जाती है और खाद देने के काम में भी आती है। इस का तेल बालने और मशीनों में 'लुब्रिकेटिंग' याने चुपड़ने के लिये बहुत इस्तेमाल होता है और साबुन बनाने में भी थोड़ा काम आता है।

यह तेल बंगाल से खास कर नेटाल और मारीशस को बहुत भेजा जाता है। सन १९०९-१० में ४४८ लाख रुपए का गया।

Rapee (रैपी)—घटिया क़िस्म की सुंघनी।

Rattans (रैटञ्ज़)—बेंत। बेंत की कई क़िस्में हैं। यह पतले छड़ लाम्बे लाम्बे और गंठदार होते हैं। इन से हाथ की छड़ियां, कुरसियों की बैठक, चटाइयां वग़ैरा कई चीज़ें तयार की जाती हैं। बाज़ क़िस्म की बेंत में एक तरह की रंगीन राल निकलती है और 'खूनखराबा' (East Indian Dragons blood) के नाम से बिकती है।

(१) गौरी बेंत या पुख बेंत—यह शिकिम, भूटान वा खासिया पहाड़ में होती है। शिकिम की यह सब से अच्छी बेंत है। इस मोटी बेंत से छड़ियां, पहाड़ी पुल याने झूले और कुरसियां बनते हैं।

(२) हूरी बेंत या मपुड़ी बेंत—यह कछार, चिटागांव और अपर आसाम में होती है। यह बेंत बहुत पतली होती है।

(३) डंगरी बेंत या कोरक बेंत या जुल—यह बंगाल, आसाम, तराई वग़ैरा में बहुत पाई जाती है। जुल बेंत की निहायत नफ़ीस छड़ियां बनाई जाती हैं और इन का बहुत व्यापार होता है।

(४) बेंत या नटर या रोटन—यह मध्य प्रदेश, करनाटक, दक्खिन वग़ैरा में होती है। इन की चटाई, टोकरी, कुर्सियां इत्यादि बहुत बनती हैं।

(५) सांची बेंत या बंधरी बेंत—यह देहरादून व सिलहट वग़ैरा की तरफ़ होती है। यही बेंत आम तौर से कुर्सियां बिनने के काम आती हैं।

(६) बड़ा बेंत या अम्ब बेतस—यह बंगाल, ओड़ीसा, करनाटक वग़ैरा कई देशों में पाई जाती है। यह पतली तो होती है मगर मज़बूत बहुत होती है, इन की छड़ियां ज्यादा बनाई जाती हैं।

(७) गोला बेंत—यह भी कई जगह होती है। सरकारी जंगलात से यह सब २ या ३ लाख रुपए की बेची जाती है।

Realgar (रीयेलगर)—मैनसिल। इसे 'रेड आर्सिनिक' (Red arsenic) भी कहते हैं। यह लाल या नारंजी रंग का एक उपधातु है जो आस्ट्रिया-हंगरी में कई जगह पाया जाता है। रासायनिक शास्त्र के अनुसार यह 'बाइसलफ़ाइड आफ़ आर्सेनिक' (Bisulphide of arsenic) है। कई चीज़ें मिला कर यह बनावटी भी तयार होती है जो प्रायः रौग़नसाज़ी में काम आती है।

Red Bark (रेड बार्क)—सिंकोना पेड़ की एक जाति।

Red Cedar (रेड सिडार)—देवदार। Sandal, Bastard देखो।

Red Sandal, Red Sanders (रेड स्यंडल, रेड स्यांडर्स)—रक्त चन्दन, लाल चन्दन। यह छोटे क़द का पेड़ कडापा, करनूल, नार्थ आरकट वग़ैरा में होता है। इस से लाल रंग निकलता है। इस लकड़ी की मूर्तियां वग़ैरा बनाई जाती हैं। लाल चन्दन घिस कर देवी देवताओं पर चढ़ाने और तिलक लगाने के लिए हिन्दू लोग बहुत काम में लाते हैं। इसे Coral wood भी कहते हैं। लाल रंग निकालने के लिए पेश्तर इस का व्यापार बहुत होता था और बिलायत यह बहुत भेजी जाती थी। इस का रंग अलकोहल में उतर आता है और उस से बहुत सुन्दर गेरुआ या जोगिया रंग का कपड़ा रंगा जाता है।

Red Wood (रेड उड)—रक्त कांचन, रक्त कम्बल, रक्त चन्दन, घुमची। यह पेड़ (Adenenthera Pavonina) बंगाल, आसाम, मद्रास और बम्बे

के तर जंगलों में होता है। कभी कभी इसे भी भूल से रक्त चन्द (Red Sandal Wood or Coral Wood) कहते हैं। इस की गोंद का नाम 'मदातिया' है। लकड़ी पीस या घिस लेने पर लाल रंग का काम देती है और ब्राह्मण लोग प्रायः घिस कर इस का तिलक असल लाल चन्दन की जगह लगाते हैं। स्मर्ण रहे कि असल लाल चन्दन दूसरी जाति का पेड़ है। इस की बुकनी से गुलाल वग़ैरा बनाया जाता है। इस के बीयों की माला बनती है इन के सन्दूकचे वग़ैरा भी बनाये जाते हैं। इस लकड़ी का चूरा सोहागे के साथ मिला कर उमदा सीमेंट बनता है।

Red-wood, Andaman (एण्डमन रेड-उड)—पदौक, चलंगदा। यह पेड़ (Pterocarpus dabergioides) ज्यादातर अंडामन टापु में पैदा होता है। इसके लकड़ी की क़दर अमेरिका और योरोप में अब बहुत होने लगी है। इस लकड़ी से तोप की गाड़ियां बनाई जाती हैं और बाजार में इसकी अच्छी क़दर है।

Red-wood. Indian (इंडियन रेडउड)—रक्तरोहन, रकतरोहन, रोहन, सोहन। यह पेड़ (Soymida Febrifuga) संटरल इंडिया और सौथ इंडिया में होता है। इस पेड़ पर खासी लसदार गोंद पैदा होती है और इसके लाल लाल रेशों से रस्से बहुत बनते हैं। इस की लकड़ी बहुत काम आती है खास करके खराद व इमारती काम में।

Reeds (रीड्ज़)—सर, किल्क, खर, पतलै। यह कई क़िस्म के खर या झाड़ हैं जो चटाइयों या टोकरे बिनने या छप्पर छाने के काम में आती हैं। इसकी सैकड़ों क़िस्म हिन्दुस्तान में होती हैं जैसे सिरकी, धे, बांस, बेंत, मुञ्ज या छड़ी, नल, नरकट, पटेर, मजरी, या कीलू वग़ैरा।

Reindeer (रेनडियर)—यह एक क़िस्म का हरिन हिम देश में होता है। जमी हुई बरफ़ पर यह हरिन स्लेज (Sledge) गाड़ी खींचकर बोझ ले जाते हैं। इसी काम के लिए उत्तराखण्ड में यह पाले जाते हैं और जब वे मर जाते हैं तब उनकी खाल उतार ली

जाती है। इसका बहुत व्यापार रूस में होता है और यह खाल दूर दूर देशों में जाती है।

Resins (रेज़िन)—राल। पेड़ों में से जो लसदार दूध निकलता है और हवा पाकर वह सूख कर थक्का सा जम जाता है वही राल या गोंद कहाती है। राल और गोंद में यह फ़रक़ है कि पेड़ में से निकला और जमा हुआ दूध जो पानी में घुल जाता है उसका नाम तो गोंद है और जो पानी में नहीं घुलता बल्कि स्पिरिट, ईथर या बेन्ज़ोल वग़ैरा घुलता है उसे राल कहते हैं। वृक्षों में पछना लगाकर राल निकाली जाती है और वारनिश या मलहम वग़ैरा बनाने के काम आती है।

सबसे ज्यादा काम की रालों की तफ़सील यहां दे दी जाती है। पूरा हाल उनके ब्यान में मिलेगा:—

(१) रजन (Rosin)—यह सबसे ज्यादा काम आनेवाली राल है। तारपीन का तेल भभके द्वारा कशीद कर के जब तेल अलग कर लिया जाता है तब जो पदार्थ बच रहता है वही रजन के नाम से बिकता है।

(२) बरगंडी पिच (Burgundy pitch)—यह राल कुन्दर या सलई के पेड़ से तयार की जाती है।

(३) डामर (Dammar), (४) कौड़ी गम (Kauri gum), (५) संदरक (Sandarach) (६) कोपाल (Copal), (७) मस्तगी (Mastic), (८) खूनख़राबा (Dragon's blood) (९) अम्बर (Amber) (०१) गुगुल।

Resin of Botany Bay—Acroid resin देखो।

Rhea Fibre (रहीया फ़ाइबर)—रहिया घास, चीनी घास। बंगाल देश में इसे कुकुंड या कुंड कहते हैं। इनके रेशों की अब बहुत क़दर होती है। इसके रेशे नर्म, रेशमी चमक के और मज़बूत होते हैं। लेकिन अभी इनको इस्तेमाल क़ाबिल बनाने में बड़ी दिक्क़त करनी पड़ती है इसलिए जूट (पटसन) से ज्यादा इसका इस्तेमाल अभी नहीं होता। हिन्दुस्तान में इसकी काश्त होने लगी है।

Rhubarb (र्हूबर्ब)—हिन्दी रेवन्द चिनी । इसका पेड़ नेपाल और शिकिम की तरफ़ होता है लेकिन उमदा रेवंद चीनी चाइना-टारटरी से फ़ारस के रास्ते से आता है। हिमालय की रेवन्द चीनी घटिया होती है। कांगड़ा मंडी से यह बहुत चलान होकर अन्य नगरों में जाता है।

Ribbons (रिबन्ज़)—फ़ीते, किनारे, डोरी । रेशम या साटन, या सूत वग़ैरा के फ़ीते जो कपड़ों के किनारों पर सीए या मंढे जाते हैं। तरह तरह की बनावट के फ़ीतों के नाम अलग अलग रक्खे गए हैं। इंगलैंड के कॆवंटरी नगर में यह बहुत बनाए जाते हैं, फ्रांस में भी उमदा नफ़ीस फ़ीते तयार होते हैं और अब स्वीज़रलैंड, बेलजियम व जरमनी में भी बनने लगे हैं। इनकी बहुत बिकरी हुआ करती है।

Rice (राइस)—चावल, धान । दुनिया भर में यह गल्ला सब से ज्यादा खाया जाता है, दुनिया के एक तिहाई लोग इसी को खा कर अपने जीवन की रक्षा करते हैं अतः यह खास खुराक़ मनुष्य मात्र की है। चावल की कई सौ क़िस्में हैं। हिन्दुस्तान, बर्म्हा, स्पेन, इटली और आस्ट्रिया व अमेरिका वग़ैरा कई देशों में चावल पैदा होता है। चावल से 'सुरा' नामक शराब जो कि हिन्दी में 'पचवई' कहाती है बहुत बनाई जाती है। स्टार्च (माड़ी या कलफ या नास्ता) वग़ैरा इस से ज्यादा बनाया जाता है। बृटिश इंडिया में चावल की काश्त सन् १९०७-८ में ७५९८०६८२ और सन् १९०८-९ में ७२८००५३६ एकड़ थी। इस के काश्त की सूबेवार तफ़सील यह है :—

सूबा	१९०७-८	१९०८-९	
अपर बर्म्हा	१८२४२२७	१९२२२१६	एकड़।
लोअर बर्म्हा	७५७६६५५	७८७६१३६	,,
आसाम	४०६२८४९	४३४५७३६	,,
ईष्टर्न बंगाल	१२४४७५००	११७९३७००	,,
बंगाल	२४४८८८००	२२५१९०००	,,
आगरा प्रान्त	४४४८२१५	२९७१६३३	,,
अवध प्रान्त	२५१८३३९	१९२०३८५	,,
पंजाब	६९५८३७	७२०४७६	,,

नार्थ वेस्ट फ्रंटियर	२९२४०	४४६५४	,,
सिंध	९३६४४२	९३४३२३	,,
बम्बे	१७५८००८	१८२१४३२	,,
मध्य प्रदेश	४४५९७०९	४४८७२९६	,,
मद्रास	१०६१३२०६	१०३०४६८५	,,
बरार	३८९२४	५६५५८	,,
कुर्ग	८११२१	८११४९	,,
अजमेर-मुरवाड़ा	६८८	१०९८	,,
सेंट्रल इंडिया	९२	५९	,,
मीज़ान	७५७८०६८२	७२८००५३६	एकड़।

चावल की पैदावार सन् १९०७-८ में कुल बृटिश इंडिया में १९५४८९९५ टन याने ५३७३७१८६० मन और सन् १९०८-९ में २७९२४४५० टन याने ७७१८८४६०० मन कूती गई थी। चावल का रक़बा अब घटता दिखाई पड़ता है उस का मुख्य कारण यह है कि अब उन खेतों में 'जूट' ज्यादा बोई जाने लगी है ख़ास कर के आसाम व बंगाल में।

चावल की चलान हर साल विदेशों को बहुत होती है, इस का लगभग तीन हिस्सा बर्म्हा देश चलान करता है। तीन साल का ब्योरा नीचे दिया जाता है:—

सन् १९०७-८	२०३३६३०००) का	१९१३०००	टन।
१९०८-९	१५८८७५०००) का	१५१२०००	,,
१९०९-१०	१८२४२००००) का	११६००००	,,

हिन्दुस्तान का चावल सब से ज्यादा सीलोन देश खरीद करता है याने सन १९०८-९ में उसने ३०४९६५ टन लिया था।

Rice glue (राइस ग्लू)—मैदे की लेई। चावल के मैदे को ठंडे पानी में घोले फिर धीमी आंच पर चुरावे, जब लस आ जाय उतार ले।

Rice paper (राइस पेपर)—राइस पेपर। फ़ारमोज़ा टापू में एक पेड़ Arabia papyrifera होता है उसी के गूदे से सफ़ेद रंग का पतला

काग़ज़ चीन देश में बनाया जाता है। इस काग़ज़ से फूल खिलौने वग़ैरा बनाए जाते हैं और इस में रंग की पुड़ियां भी बांध कर आती हैं।

Rick cloth (रिक क्लाथ)—पानी में २० फ़ी सदी साबुन घोल कर उस में कपड़े को भिगावें फिर तूतिया के घोल में ग़ोते दें। इस के बाद निकाल कर और साफ़ पानी से धोकर निकाल लेवें। यह कपड़ा वाटर-प्रूफ़ होजाता है।

Rochelle Salt (राचल साल्ट)—यह नमक 'टारटेरट आफ़ पोटाश' और सोडा' (Tartarate of Potash and Soda) है। क्रीम आफ़ टारटार' (Cream of tartar) और 'कारबोनेट आफ़ सोडा' (Corbonate of Soda) से तयार किया जाता है।

Rock Salt (राक साल्ट)—सेंधा नमक, सैंधव। Salt देखो।

इस नमक की खान 'खेवड़ा', 'शाहपुर' व 'कालानाग' व 'कोहाट' में हैं। इन खानों से औसतन लगभग १,०९,००० टन नमक हर साल निकलता है। इन खानों से नमक सरकारी इन्तज़ाम से निकाला जाता है।

Rock Crystal (राक क्रिस्टल)—बिल्लूर, बिल्लौर, स्फटिक। यह कई रंग के होते हैं। शुद्ध चिट्टा कांच की तरह का पारदर्शक पत्थर स्फटिक कहाता है, इन की कई क़िस्में प्राचीन संस्कृत ग्रन्थों में मानी गई हैं।

(१) सूर्य कान्त—सूर्य के प्रकाश में रखने से अग्नी प्रगट होती है।

(२) चन्द्र कान्त—चन्द्र के ज्योति में अमृत देता है।

(३) नीर कान्त—इस में से जल स्रवता है (नं० १, २, ३ यह तीनों अब नहीं मिलते)

(४) शुक्र ज्योति—यह स्वच्छ पानी में रखने से एक रंग हो जाता है।

(५) राजवत—(कदाचित Rose-quartz) लाल होता है कमलवत।

(६) राजमय—(कदाचित Smoky quartz या Amethyst) जिस में नीली छाया मारे।

(७) ब्रह्ममय—(कदाचित Milk quartz) जिस के गिर्द सूत्रवत चिन्ह हो।

(८) तैलाख्य—जो आकाशवत निर्मल हो और हर रंग के साथ मिल कर वही रंग ग्रहण करे।

(९) हंस गर्भ—यह देखने से विष हरे।

तञ्जौर ज़िला में एक क़िस्म के बिलौरी खड़ मिलते हैं जिन्हें तराश कर सस्ते नग बनाये जाते हैं इन्हें 'Vallum Diamond' कहते हैं और काला बाग़ में भी एक तरह के बिल्लौर पाये जाते हैं जिन से मनके और सस्ते नग बनाये जाते हैं। बिल्लौर से कबज़े में जड़ने के नग, मनके वग़ैरा जैपुर में बहुत तराशे जाते हैं।

Rope Cable (रोप केब्ल)—Cable देखो।

Rose. (रोज़)—गुलाब। यह कई जाति और कई क़िस्म के होते हैं मगर आम तौर से सभी 'गुलाब' कहाते हैं। सब से ज्यादा ज़रूरी और व्यापार के काम का गुलाब 'बसरा का गुलाब' या सदबर्ग कहाता है। गुलाब का इत्र ग़ाज़ीपुर में बहुत तयार होता है और बहुत मशहूर है। गुलाब जल भी इस ज़िले में बहुत उतारा जाता है। गुलाब का इत्र ख़ालिस बहुत ही कम मिलता है, रौग़न सन्दल की ज़मीन ज़रूर दी रहती है। बिलायत में गुलाब का इत्र बेलगेरिया और जरमनी से जाता है।

Rose-Oil (रोज़ आयल)
Rose-water (रोज़-वाटर) } —गुलाब जल। हिन्दुस्तान और पर्शिया में गुलाबजल बहुत तयार किया जाता है। ग़ाज़ीपुर, जौनपुर, लखनऊ, क़न्नौज, अलीगढ़ और बदाऊं में गुलाबजल बहुत ज्यादा तयार होता है तिस पर भी फ़ारस से गुलाबजल तयार होकर बम्बई में हर साल बहुत आया करता है। योरोप के गुलाब ज्यादा खुशबूदार और सस्ते होते हैं। गुलाबजल और इत्र गुलाब खास कर के ग़ाज़ीपुर में बहुत तयार होते हैं। इस ज़िले में गुलाब के

दरख्त बहुत लगाये जाते हैं। मिस्टर चटरजी साहब लिखते हैं कि 'मामूली फस्ल में गुलाब तायदाद के हिसाब से बिकता हैं, मामूलन इन का निर्ख दस लाख फूल फ़ी १० रु० के हिसाब से मिलता है। जौनपुर में भी गुलाबजल कशीद होता है और गुलाब बनारस से रेल द्वारा हर रोज़ भेजा जाता है। पच्छां के ज़िलों में फ़ारस का गुलाबजल बम्बई से ज्यादा आता है। अलीगढ़ में गुलाब बहुत होता है और क़न्नौज के बहुत से गंधी हांथरस, सिकन्दरा राव व बरौना ज़िला अलीगढ़ और बिल्हौर (कानपुर) में जाकर गुलाबजल व उस का इत्र निकालते हैं। इन की बिकरी बहुत रहा करती है।

Rose-wood (रोज़-उड)—स्वेत साल, सित्सल, कालरुख, सीसू। यह बहुत सुन्दर लकड़ी होती है और आरायशी सामान बनाने लायक़ है। सौथ अमेरिका में इस की कई क़िस्में पाई जाती हैं। सब से उमदा लकड़ी ब्राज़ील से आती है। इस की नसों की धारियां इतनी सुन्दर होती हैं कि इस की नक़ल रौग़नसाज़ी कर के दूसरी क़िस्म की लकड़ियों में दिखाई जाती है।

हिन्दुस्तान में इस की एक जाति का पेड़ नैपाल, शिकिम और छोटा नागपुर के बीच में, अवध व मध्य प्रदेश वग़ैरा में होता है। इस की लकड़ी को 'ब्लाक उड' (Black wood) और (Rosewood of Southern India) 'रोज़ उड आफ़ सदर्न इंडिया' भी कहते हैं, इस लकड़ी से उमदा और क़ीमती चोबी चीज़ें तयार होती हैं। यद्यपि यह ब्राज़ील देश की सीसू से घटिया होती है मगर मेडागास्कर और जमैका की सीसू से उत्तम होती है। यह लकड़ी मद्रास के जंगलात से कट कर विलायत भी बहुत जाती है।

Rosin (रोज़िन)—रजन। राल की क़िस्मों में यह सब से ज्यादा काम की राल है। तारपीन का तेल भबके द्वारा निकाल कर जब तेल अलग कर लिया जाता है तब जो चीज़ बच रहती है उसे रजन कहते हैं। कागज़ पर कलफ़ देने और ज़र्द साबुन बनाने के लिए इस का बहुत इस्तेमाल होता है। सर्कारी जंगलात देहरादून में और भौली (नैनीताल)

में एक छोटा कारखाना तारपीन के तेल निकालने का है; चीढ़ के पेड़ से तारपीन और रजन दो क़िस्म की चीज़ें निकलती हैं। साबुन के कारख़ाने वाले रजन को खरीद लेते हैं। मिस्टर चटरजी साहब लिखते हैं कि "सोप फ़ेकटरियों और पेपर मिलों के मनेजरों के ज़बानी मैंने सुना है कि अमेरिका की रजन से यहां की रजन घटिया होती है।" अभी इस कारोबार करने की इजाज़त आम लोगों को नहीं है।

Rottenstone (राटन स्टोन)—यह एक क़िस्म का नर्म रेतिया पत्थर है जो डरबीशीयर और सौथवेल्ज़ में बहुत पाया जाता है। इसकी धूल पालिश करने के काम आती है।

Roucou (रूकों)—Annotto देखो।

Rouge (रूज)—रूज। हिन्दुस्तान के कारीगर लोग भी इसे रूज ही कहते हैं। यह बारीक कत्थिया रंग की बुकनी होती है जिससे चांदी या सोने की चीज़ों पर रगड़ कर जिला करते हैं। असल में यह एक प्रकार का लोह-भस्म या दग्ध-लोह (Oxide of iron) है। तूतिया को इतना तपावे कि उसमें का तेज़ाबी भाग उड़ जाय तो रूज बन जायगा, इससे सोने चांदी की चीज़ साफ़ की जाती है। इसी की दूसरी क़िस्म 'क्रोकस' (Crocus) कहाती है और पीतल या स्टील पालिश करने के काम आती है, यह स्याही मायल या गहरा लाल सफ़ूफ़ होता है। रूज तयार करने के चन्द नुसखे यह हैं :—

(१) जौहरियों के काम का रूज—तूतिया को पानी में घोले इसी तरह आक्ज़ालिक एसिड में भी पानी मिलाले। इन दोनों को मिलाने पर जो गाद नीचे बैठ जाय उसे निथार कर पानी से खूब धो डाले और सुखा ले। यह खार आग पर रखने से बलने लगेगी। बल जाने के बाद जो सफ़ूफ़ बचे वह उमदा रूज का काम देगा।

(२) तूतिया को एक कुल्हिया में रखकर पाव घंटे तक आग में रख दे। इस तूतिया भस्म में रूखी खड़िया मिलाकर काम में लावे।

(३) स्लेट साफ़ करने का मसाला—½ औंस खड़ियां और पारा ले और इस में २ औंस 'सिरकी खड़िया' मिलाकर थोड़ी सी वाइन के योग से साबड़ द्वारा रगड़कर पालिश कर ले। (सिरकी खड़िया (Prepared Chalk) इस तरह तयार करे कि खड़िया बारीक पीसकर पानी में घोल दे और कुछ देर पड़ा रहने पर जो मोटा गाद नीचे बैठ जाय उसे छोड़ दे और बाकी खड़िया मिला जल दूसरे बोतल में रखकर उसकी गाद भी बैठने दो यही गाद बारीक खड़िया की सुखा लेने पर 'सिरकी खड़िया' बनेगी)।

Rouge powder (रूज पौडर)—Steatite देखो।

Ruby (रूबी)—माणिक, लाल। यह एक क़िस्म का लाल रंग का क़ीमती संग या रत्न है जो केवल बर्म्हा में चंद खानों में से निकलता है। यह बहुत सख्त होता है इस से ज्यादा सख्त केवल हीरा होता है। घटिया माणिक की चंद क़िस्में सिलोन, सायाम और चीन में पाई जाती हैं। साफ़ और बे ऐब बड़ा नग कदाचित ही कभी मिलता है अगर कोई उमदा मानिक ४ क़िरात से ज्यादा तौल का हो तो वह लाल कहाता है और उसकी क़ीमत हीरे से भी ज्यादा लगाई जाती है। बर्म्हा के माणिक को 'ओरियंटल रूबीज़' (Oriental rubies) भी कहते हैं।

अब बनावटी माणिक भी तयार होने लगा है। 'अलूमिना' (Alumina) और 'फ्लूओराइड आफ़ बेरियम' (Fluoride of barium) दोनों बराबर हिस्सा लेकर गलाया जाता है और उसमें २ या ३ फ़ी सदी 'बाईक्रोमेट आफ़ पोटाशियम' (Bichromate of Potassium) मिलाने से यह बनता है। इनके गलाने के लिए बहुत ही तेज़ आंच दर्कार होती है। जो कुछ हो बनावटी नग फिर भी बनावटी ही है, अलबत्ता घड़ीसाज़ों के काम की यह चीज़ है। मुक़ाम 'बुलोन' (Boulogne) में नक़ली मानिक बहुत तयार करके बिक्री के लिए तमाम दुनिया में भेजा जाता है।

सन् १९०३ में बर्म्हा के खानवाली कम्पनी में ९८,५७५ पौंड (सिक्का) अर्थात १,४३८,६२२५ रु० का माल निकाल कर बेचा था जिस में से ४४,९५० पौंड यानी ६,७३,२५० रु० का खालिस मुनाफ़ा हुआ था।

सन् १९०९ में २,१०,३७५ केरात माणिक मालियती ९,५९,८०६ रु० का 'बर्म्हा रूबी माइन्ज़' ने निकाला कहा जाता है। कंपनी को फ़ायदा नहीं है और सरकारी महसूल उस के ज़िम्मे बहुत बाक़ी पड़ा है।

Rugs (रग्ज़)—कम्मल, ऊनी फर्श, कालीन वग़ैरा। ग्रेट बृटन में इस के कारखाने बहुत ज्यादा हैं और दुनिया के कुल मुल्कों में यह माल यहां से जा कर बिकता है।

Rum (रम)—रम। यह एक क़िस्म की शराब है। यह शीरा या चोटा से तयार की जाती है। जहां शक्कर का कारखाना है वहां यह ज्यादा बनाई जाती है। संस्कृत में ऐसी मदिरा को गौड़ी और शीधू कहते हैं।

Russia Leather (रशिया लेदर)—यह बछड़ों की खाल के चमड़े लाल रंग के रूस में तयार किए जाते हैं और जिल्दबन्दी के काम में इन का बहुत इस्तेमाल होता है। बेग, मनीबेग, सिगार-केस इत्यादि इन का बहुत बनता है। इस चमड़े में कीड़े नहीं लगते।

Rye (राइ)—देवगन्दुम। एक क़िस्म का अनाज गेहूं की तरह का होता है, योरोप में ग़रीब किसान इसे बहुत बोते हैं। मवेशी के चारे के काम भी आता है। रोटी बनाने के अलावा इसे चुआ कर 'बीयर' शराब भी तयार की जाती है। इस की पुआल छप्पर छाने और बिछाली के काम आती है।

S.

Sabai (सबई)—बबरु, भभर, बगर, सबई, बनकास, बनकुश, बन घास। यह घास राजमहल से नैपाल तक, छोटा नागपूर, राजपुताना वग़ैरा में पैदा होती है। जहां यह ज्यादा पैदा होती है, वहां इस से चटाई व रस्से वग़ैरा बनाए जाते हैं। अब तो इस घास की मांग काग़ज़ बनाने के लिए बहुत होती है। शाहजहांपुर में इस की चटाइयां बहुत बनाई जाती हैं। गोंडा व बहराइच के जंगलात से लखनऊ पेपर मिल्ज़ में यह बहुत भेजी जाती है। इस सूबे और तराई से इस घास को बंगाल का पेपर मिल भी मँगाता है।

Sable (सेब्ल)—समूर। एक क़िस्म का न्यूला या चूहा जिस की पोस्तीन सब से ज्यादा उमदा, नर्म, चिकनी, सुन्दर और क़ीमती होती है। अमेरिका, साईबीरिया और रूस में यह जानवर बहुत होता है। इसे जाल में फंसा कर पकड़ते हैं। काश्मीर का 'समूर' मशहूर है।

'समूर' अगर पुराना हो जाय तो गर्म गर्म बालू और आटा उस पर खूब छिड़क कर ब्रश से साफ़ करे और झटकार ले वह साफ़ और नया सरीखा हो जायगा।

Sable Fish (सेब्ल फ़िश)—हिलसा मछली। यह खाई जाती है। बंगाल में इस का अच्छा रोज़गार है। यह सुखा कर दूर दूर भी भेजी जाती है।

Sacchrine (सच्चरीन)—शक्करीन। यह सफ़ेद रंग की बेहद मीठी दानेदार चीज़ है जो कोलटार से निकाली जाती है। इसे 'ग्लूसाइड' (Glucide) भी कहते हैं। गो यह बड़ी मीठी चीज़ है, परन्तु कई कारण से शक्कर की जगह इस की तिजारत नहीं हो सकती, लेकिन दवा वग़ैरा में मिठास के लिए इस का इस्तेमाल किया जाता है।

Safes (सेफ्स)—लोहे के सन्दूक या आलमारियां, सेफ्स । क़ीमती चीज़ें या खज़ाना रखने के लिए यह सन्दूक़ मज़बूत लोहे के बनते हैं । जिन्हें चोर जल्दी नहीं तोड़ सकता । दोहरी तह के मोटे लोहे लगाए जाते हैं और बीच में ऐसा मसाला भरा जाता है जिस से आग लग जाने पर भी अन्दर की चीज़ों पर आंच कम लगती है और वह जलती नहीं । यह मसाला मामूली तौर से फिटकरी और जिपसम यानी हरसौंठ मिलाकर बनता है । दूसरा अच्छा नुसखा यह है कि ३ हिस्सा फिटकरी और एक एक हिस्सा चिकनी मिट्टी और संगमरमर का चूर मिला कर मसाला भरा जाता है ।

Safflower (स्याफ़्लावर)—कुसुम, कुसुम्ब, कड़। इसे Cultivated safflower या Bastard safflower भी कहते हैं । यह दो काम का होता है, एक से उस का फूल लेकर रंग बनाते हैं जिसे 'कुसुम का रंग' (Carthamine Dye) कहते हैं और दूसरे उस का बीज लेकर उस का तेल निकालते हैं जो 'कड़ का तेल' (Carthamus oil) कहाता है। हिन्दुस्तान में यह प्रायः बहुत बोआ जाता है खास कर के रायपुर व छिन्दवाड़ा (मध्य प्रदेश), मेरठ (संयुक्त प्रान्त), होशियारपुर व अम्बाला (पंजाब) में, और काबुल वग़ैरा की तरफ़ पहाड़ों में कुसुम बहुत अच्छा होता है । पुड़िया का बिलायती रंग चल जाने से इस रंग की मांग कम होगई है तौ भी ५५ या ६० हज़ार रुपए का इस का रंग चलान होता रहता है । रेशमी और सूती चीज़ें रंगने में इस का बहुत इस्तेमाल होता है । इस का रंग हांगकांग में बहुत भेजा जाता है, सुना जाता है कि जापान में इस की मांग अब होने लगी है। हिन्दुस्तान ही में इस की खपत बहुत है ।

तेल के लिए कड़ की काश्त अहमदनगर, पूना, सतारा, बीजापूर, धाड़वाड़ व बेलगांव में ज्यादा होती है । इस का तेल घी में बहुत मिलाया जाता है । घटिया तेल चमड़े पर चुपुड़ने और मामूली रौग़न बनाने के लिए इस्तेमाल होता है ।

इसी नाम की एक दूसरी चीज़ भी है जो Wild Safflower याने 'जंगली कड़' कहाती है और हिन्दी में उसे कण्टियारी, कान्दियारी, कड़ड

या खारेजा कहते हैं। इस में से तेल बहुत निकलता है जो पीली तेल कहाता है। तेल पकाने के बाद ठंडे पानी में उंडेल दिया जाता है जिस से वह गाढ़ा रौग़न बन जाता है इस से आफ़रीदी लोग रौग़नी कपड़े तयार करते हैं। इस की खली उमदा खाद का काम देती है।

Saffron (स्याफ़रन)—ज़ाफ़रान, केसर। यह खुशबूदार फूलकी पत्तियां हैं। सब से अच्छा केसर काश्मीर का होता है। मेडीटरेनियन समुद्र के देशों में भी पैदा होता है। हिन्दुस्तान में इसकी खासी मांग रहती है और यह क़ीमती होता है। इसलिए मिलावटी या नक़ली केसर बहुत बिकता है। सबसे उमदा केसर को 'शाही ज़ाफ़रान' कहते हैं यह फूल का ऊपरी हिस्सा है। सूखी पत्तियां जब बटोरी जाती हैं तो 'मोंगला' कहाती है और १ रु० तोला के भाव बिकती है। मोंगला को कूटकर पानी में डाल देते हैं, जो पत्तियां नीचे डूब जाती हैं वह अव्वल दर्जे का केसर होता है और निवल कहाता है जो ऊपर तैरता रहता है उसे फिर कूट कर पानी में डालते हैं इस तरह तीन बार किया जाता है तीसरे दर्जे का केशर ॥) तोला बिकता है इसे 'लच्छा केसर' कहते हैं। लगभग ६ लाख का केसर हर साल हिन्दुस्तान में बाहर से भी आता है। यह ज़्यादातर फ्रांस से बम्बई में आता है। सन १९०६-७ में ६,२७३३३ रु० का फ्रांस से बम्बई में आया। बम्बई से लगभग ५० या ६० हज़ार का केसर हांगकांग और अरब देश को भी भेजा जाता है।

यह नफ़ीस केसरी या ज़र्द रंग पैदा करने के लिए मिठाइयों में मिलाया जाता है। इस की सुगंधि भी उत्तम होती है। जादू टोनें में इस का इस्तेमाल खास तौर पर होता है। हिन्दुस्तान के बाज़ारों में अक्सर कुसुम को मिला हुआ सस्ते भाव बिकता है।

Sago (सागो)—सागू, साबूदाना। यह चीज़ कई क़िस्म के पेड़ के गूंद में से निकलता है। पेड़ को काट कर उस के टुकड़े टुकड़े कर दिए जाते हैं और गूदा निकाल कर पानी में कूटा जाता है जिस से उस के अन्दर के दाने निकाल कर धूप में सुखा लिए जाते हैं।

यह कमज़ोर और बीमार को खाने के लिए दिया जाता है और पुष्ट चीज़ है।

(१) इस की एक जाति Sago-palmo of Molacca, Java Sago or Arenga Sacharifera है जो हिन्दुस्तान में होती है और बर्म्हा व आसाम के जंगलों में बहुत पाई जाती है। इस पेड़ का नाम 'तौंग-ऑंग', 'गुमुती' या 'एजू' है। यह घटिया सागू होता है। इस की ताड़ी, शराब जो 'अरक' कहाती है बनती है। एक पेड़ में से लगभग १·५४ रतल सागू निकलता है।

(२) दूसरी क़िस्म (Indian Sago-palm, Bastard sago or Coryota Urens) 'म्हार मरदी', 'शुंडपान', 'मरी', 'भेड़ावा' वग़ैरा नाम का पेड़ शिक्किम, हिमालय, सिलोन, सिंगापुर और आसाम में होता है।

(३) असल सागू Metroxylon Sago है मगर यह हिन्दुस्तान में नहीं होता। फ्रांस में नक़ली साबूदाना आलू के मैदे से भी बनाया जाता है मगर असली व नक़ली में बड़ा फ़र्क़ है।

Saj (साज)—आसन, असैन, पियासाल। यह लकड़ी इमारती काम या कश्तियां बनाने वग़ैरा में बहुत काम आती है। इस की गोंद जलाने पर सुगंधि देती है। छाल से रंग भी निकलता है और वह दवा के काम आती है, खास कर के कसाव के लिए यह बहुत इस्तेमाल होती है। इस पेड़ पर लाख भी होता है और टसर के कीड़े इस की पत्तियां खिला कर पाले जाते हैं।

Sal (साल)—साल, साखू। यह लकड़ी सख्त बहुत मज़बूत होती है मगर इस के रेशे चिकने नहीं होते। जंगलों में इस की हिफ़ाज़त गवरमेंट की तरफ़ से की जाती है। इस की छाल में से या पेड़ में पछना लगा कर सुगंधित राल निकाली जाती है। यह पेड़ रीवां, छोटा नागपुर, सेंट्रल प्राविंस वग़ैरा में बहुत होता है। इस की छाल से एक क़िस्म का लाल रंग व कसाव निकलता है। इस के बीज ग़रीब लोग खाते भी हैं, खास कर के छोटा नागपुर, गया, गोरखपुर

वग़ैरा में। इस की लकड़ी बहुत बिकती है जिन की शहतीरें, धरन, मज़बूत चोबी चीज़ें तयार की जाती हैं। इस की बिक्री बहुत रहा करती है।

Sal ammoniac (साल अमोनिआक)—नौसादर। अमोनिया की नमक का तेज़ाब मिला कर लोहे के बरतन में उस का सार निकाला जाता है। इस की 'क़लमें' या 'पपड़ियां' बन जाती हैं। धातुओं को टांका लगाने और धातु जिला करने के काम आता है। यह नौसादर और नमक के तेज़ाब के प्रयोग से तयार होता है। यह 'म्यूरियेट आफ़ अमोनिया' (Muriate of ammonia) है।

Salep (सलेप)—सालब मिसरी। यह कई तरह के पेड़ की जड़ है जो अफ़ग़ानिस्तान, बिलोचिस्तान, बुख़ारा में होता है और नीलगिरी पहाड़ में भी होता है। नक़ली सालब आलू और गोंद से बन कर नक़ली सालब के नाम से मिलता है।

हिन्दुस्तान में जो सालब मिसरी आम तौर से बिकती है वह प्रायः मानकद की जड़ है इस के अलावा सफ़ेद मूसली या स्याह मूसली की जड़ भी सालब मिसरी के नाम से बिकती है। असल सालब मिसरी लेवंट और फ़ारस से बम्बई में आती है और काश्मीर में भी होती है। हिन्दुस्तान में यह चीज़ ज्यादातर अफ़ग़ानिस्तान वग़ैरा से खुश्की के रास्ते से बहुत आती है।

Sal Prunellæ (साल प्रुनेला)—'नाइट्रेट आफ़ पोटाश' (Nitrate of Potash) को साफ़ कर के पिघला कर बनाई हुई छोटी छोटी टिकियां बारूद बनाने और कई रासायनिक काम में यह इस्तेमाल होती है।

Sal Volatile (सालवोलेटाइल)—'कारबोनेट आफ़ अमोनियम' (Carbonate of ammonium) में अमोनिया और हलका अलकोहल मिला कर यह बनाया जाता है। प्रायः इस में नीबू का इत्र या जावित्री का तेल मिला दिया जाता है। यह एक सूंघने की दवा है।

Salicin (सालिसिन)—तीलियोंदार झाड़ या घास । बिन, बैंत इत्यादि ऐसी घासों की छड़ों को, जिससे टोकरियां वग़ैरा बीनी जा सकें छाल में से सफ़ेद सफ़ेद सफ़ूफ़ निकलता है। यह कुनैन की जगह काम आता है और कुनैन में मिलाकर सस्ता कुनैन भी बेचा जाता है।

Salt (साल्ट)—नमक, नोन, लवण । इसका Sodium cholride नाम सांयस में है। खारी पानी का जल उड़ाकर उसका नोनहा अंश सुखा लेते हैं। नमक की खान भी हैं जिनमें से नमक के ढोंके खोद कर निकाले जाते हैं। नमक कई तरह का होता है। (१) समुद्री नमक जैसे सामुद्र या करकच नमक (२) सैंधव या सेंधा नमक इस की कई खान सूबा पंजाब में हैं (३) रोमक या काशम्बरी या साम्हर नमक जो साम्भर झील से निकलता है (४) पांशुज या खारी नमक (Glauber's salt) जो रेह में से निकाला जाता है (जो धूप में सुखाकर बनता है वह 'आबी' और जो आंच पर सुखाया जाता है वह 'जरिया' कहाता है) (५) काला नमक यह भिवानी (हिसार) में तयार किया जाता है, (मामूली नमक को हड़ व बहेड़ा व सज्जी के साथ गलाकर यह बनता है)। इनके अलावा कई तरह के और भी नमक या खार तयार किए जाते हैं जो दवा या रासायन के काम में आते हैं जैसे जवाखार, फूली, सज्जीखार वग़ैरा।

नमक खाने में बहुत आता है और इसके अलावा उससे सोडा, नमक का तेज़ाब और कभी कभी साबुन भी बनता है।

(१) करकच नमक—ज्यादातर बिदेशों से आता है जैसे (क) पंगा नोन चेशियर, लिवरपूल, मिडिल्सबरो इत्यादि से बंगाल व आसाम में बहुत आता है। (ख) एडन में करकच नमक बहुत तयार होता है। (ग) रवाया करकच अफ़रिका में रेड सी के किनारे बनता है। (घ) सालिफ करकच भी अफ़रिका से आता है। (ङ) बम्बैया करकच (च) स्पानिश करकच (छ) मद्रासी करकच इत्यादि इत्यादि।

(२) सेंधा नमक—इसकी तीन बड़ी खानें पंजाब में साल्ट रेंज में, पश्चिमोत्तर सीमा में कोहाट और रियासत मंडी में हैं। सब

से ज्यादा नमक साल्टरेंज के खानों से निकलता है। खेवड़ा का नमक यहीं से आता है इन के अलावा और भी कई खानें हैं।

(३) साम्हर नमक—चंद ऐसे बड़े बड़े ताल साम्हर, डिडवाना, लोनार कचोर रेवासा (राजपूताना) में हैं जिनमें नमक जमाया जाता है। रियासत ग्वालियर, कच्छ इत्यादि और भी कई जगह ऐसे नमक होते हैं।

नमक का कारोबार सर्कार के हाथ में है।

नमक हर साल लगभग १२ टन से ज्यादा निकाला जाता है और इस के अलावा पांच या पौने पांच लाख टन बिदेशों से आता है। हिन्दुस्तान में हर साल लगभग ४ करोड़ मन नमक खाया जाता है जिससे सर्कारी आमदनी ६ करोड़ रुपये की होती है।

Salt, Spirits of (स्पिरिट आफ़ साल्ट)—Hyorochloric acid देखो।

Salt Cake (साल्ट केक)—शोरिया खार। यह एक क़िस्म का घटिया 'खारी नमक' है। इसे Nitre Cake कहते भी हैं।

Saltpetre (साल्टपीटर)—शोरा। Nitrate of Potash भी कहाता है। Nitre देखो।

Sandalwood (सेंडल उड)—चन्दन की लकड़ी, चन्दन, संदल। यह मधुर सुगंधवाली लकड़ी का पेड़ है और मैसूर, कुर्ग, हैदराबाद, करनाटक, वेस्टर्न घाट, नीलगिरी पहाड़ व कोयम्बटोर वग़ैरा की तरफ़ बहुत होता है। हिन्दुस्तान के उत्तर भाग में लगाने से लगता है। किन्तु इस में सुगंधि कमती होती है। चन्दन दो क़िस्म का होता है।

(१) एक सफ़ेद रंग का उत्तम चंदन होता है जो श्रीखंड कहाता है।

(२) दूसरा घटिया जाति का ज़र्दी मायल होता है इसे पीत चन्दन कहते हैं।

चन्दन की लकड़ी निहायत चिकनी और बहुत ही बारीक रेशे की होती है और बेल बूटा खोदने के काम में बहुत पसंद की जाती

है । हिन्दू लोग इसे घिस कर इस का तिलक लगाना पुण्य समझते हैं और इस का बुरादा जलाने से सारा घर महक उठता है इस की भीनी भीनी सुगंधी बड़ी रुचिकर होती है । चन्दन का तेल भी बनता है और दूसरे इत्र बनाने में इस का ज़ामिन दिया जाता है और बारनिश में मिलाने से चन्दन की सी खुशबू उस में बनी रहती है । कन्नौज में चन्दन का तेल बहुत निकाला जाता है । उमदा तेल 'मलयागिरि' और घटिया तेल 'जहाजी या कठिया' कहाता है । मैसूर व कूर्ग में भी तयार किया जाता है । तेल केवल हीर की लकड़ी से निकाला जाता है । चन्दन की लकड़ी से क़ीमती क़लमदान कंघियां इत्यादि भी बनती हैं ।

लाल चन्दन दूसरी चीज़ है । Red Sandal देखो ।

चन्दन की लकड़ी विलायत भी बहुत भेजी जाती है ।

सन् १९०७-८ में १२·०७ लाख रुपए की गई ।
,, १९०८-९ में १०·३५ ,, ,, ,,
,, १९०९-१० में ७·७८ ,, ,, ,,

इस की लकड़ी विलायत बहुत जाया करती थी लेकिन इस का तेल निकालने में घाटा होने लगा इस लिए कई कंपनियां टूट गईं । युनाइटेड स्टेट में अब भी २ लाख रुपए से ज्यादे के मालियत की मांग रहती है । चन्दन मैसूर के राज्य से ज्यादा रवाना होता है जिस से सन् १९०८-९ में रियासत को लगभग १०·५३ रुपए की आमदनी हुई थी ।

Sandal, Bastard (ब्यास्टर्ड स्यण्डल)—देवदार, नाटका देवदार । इसे Red Cedar भी कहते हैं और सायंटीफ़िक नाम इस का Erythroxylon monogynum है । यह पेड़ करनाटक, डेकन और सिलोन में होता है । इस की लकड़ी से जो तेल निकलता है वह 'टार' की तरह का होता है और सिलोनी भाषा में 'दुम्मेल' कहाता है और नाव पर मलने से लकड़ी जल्दी पानी में सड़ती नहीं । दवा में भी बहुत इस्तेमाल होता है ।

Sandarach (स्यण्डरक)—संदरूस, चदरूस, संदरक । यह ज़र्द रंग की बलने वाली राल है । मरक्को (अफ़रिका) में इस का पेड़ बहुत है । मस्तगी से बहुत मिलती जुलती है और इन दोनों के गुण भी लगभग समान हैं । फ्रेंच पालिश बनाने में इस का बहुत इस्तेमाल होता है, रंगसाज़ी में अक्सर काम आती है । इस के पेड़ की लकड़ी, ठस, मज़बूत और कठोर होती है ।

Santonica, Santonin (स्याण्टानिका, स्याण्टोनिन)—किरमाला, किरमानी ओवा । हिमालय पहाड़ के पश्चिम भाग में काश्मीर से कुमाऊं तक बहुत होता है । अफ़ग़ानिस्तान, फ़ारस वग़ैरा से भी आता है । यह मशहूर दवा है लेकिन अब जरमनी से ज्यादा आती है । बाज़ारों में जो यह मिलती है उस में मिलावट बहुत रहती है । इसे 'वर्मसीड' (Wormseed) भी कहते हैं । इस से 'स्याण्टोनिन्' नामक दवा तयार की जाती है ।

Sap green (स्याप ग्रीन)—यह रंग Buckthorn berries के रस से तयार होता है मगर रंग कच्चा होता है । फलों को आठ दस दिन सड़ाते हैं फिर उसका रस निकालकर उसमें फिटकरी मिलाकर आंच पर गाढ़ा करते हैं । इसके बाद सूअर की अंतों में रखकर सुखा लेते हैं । यह सब्ज़ रंग का मसाला है और रंगने के पहिले इसमें चूने का पानी और ज़रा सी गोंद मिलानी पड़ती है । Yellow berries देखो ।

आरसीनिअस एसिड का रुफ़ूफ़ ११ औंस, कारबोनेट आफ़ पोटाश $1\frac{1}{2}$ रतल और उबलता हुआ पानी ५ सेर मिलाकर और हल करके छान लिया जाता है । २ रतल तूतिया पानी में घोलकर ऊपर वाले मसाले में हल कर लेने नफ़ीस सब्ज़ रंग तयार हो जाता है ।

Sappan wood (स्यपन उड)—पतंग, बकम । इस लकड़ी में से लाल रंग निकलता है जिसकी मांग पहिले बहुत रहती थी और हिन्दुस्तान से यह रंग बाहर बहुत भेजा जाता था । जब से अनलीन कलर निकला है तबसे इसका रोज़गार टूट गया । अब भी छींट छापने के लिये इस रंग की ज़रूरत रहा करती है । रंगरेज़ लोग इस से अब भी

कपड़े रंगते हैं और अहमदाबाद में ज्यादा इस्तेमाल होता है। इसका पुराना नाम 'ब्राज़ीलियन उड' (Brazilian wood) भी है।

Sapphire (सफ़ायर)—नीलम। यह नीले रंग का एक रत्न है। हलका और गहरा कई आभा का मिलता है। मुक़ाम ज़ंस्कार (काश्मीर) मे इस की खान है। बर्म्हा व सिलोन में भी मिलता है। यह लगभग हीरे की तरह कड़ा होता है। घटिया नीलम आस्ट्रेलिया और यूनाइटेड स्टेट में भी पाया जाता है। यह क़ीमती जवाहिर है। अब नक़ली नीलम भी बनने लगा है। सन १९०९-१० में १४,३९६ क़रात मालियती १२,०२१ रु० का बर्म्हा रूबी माइन्ज़ कम्पनी ने निकाला Boulogne से नक़ली नीलम बहुत बन कर बिकने आता है।

(१) नक़ली नीलम—४५·७ भाग साफ़ बारीक किया हुआ क्वार्ज़ (quartze), २२·८ भाग साफ़ सूखा हुआ सोडा कारबोनेट, ७·६ भाग भुना हुआ सोहागा, ३·४ भाग शोरा, ११·८ भाग साफ़ सेंदुर को हेसियन घड़िया में रख कर भट्टे में खूब गलावे, इस में ०·१०६ भाग कोबाल्ट कारबोनेट मिलाने से नीलम नक़ली बन जाता है।

Sarsaperilla (सारसा परिला)—सालसा, सारिवा, अनन्तमूल। यह बेल बांदा और अवध के बीच में और शिकिम व ट्रावंकोर व सिलोन में होती है। यह मशहूर दवा है और हिन्दुस्तानी या देशी सालसा कहाती है, असल सालसा दूसरी चीज़ है जो जमैका और लीमा में होता है और वह कई जाति के Smilax की जड़ हैं और बड़ी कडुवी मगर बड़े फ़ायदे की चीज़ है। खून साफ़ करने की तो अक्सीर दवा है।

Sassafras (स्यासाफ्रस)—यह पेड़ यूनाइटेड स्टेट और केनेडा में कसरत से पाया जाता है। इस की छाल व जड़ चमड़े की बीमारी खास कर के गठिया में बहुत फ़ायदा देती है। इस की जड़ से तेल भी निकाला जाता है जो 'आयल आफ़ सासाफ्रस' (Oil of Sassafras) कहाता है और प्रायः दवा में यही ज्यादा काम आता है। इस की लकड़ी में से एक क़िस्म का क़ीमती रंग भी निकाला जाता है।

Sassafras, Nepal (नेपाल स्यासाफ्रस)—मलिगिरी। यह Nepal Camphor wood भी कहाता है। इसकी लकड़ी में कपूर की सी खुश्बू होती है। प्रायः 'रोहू' या 'गुनसर' (Cumamomum cecicadaphne) की लकड़ी से धोका हो जाता है। इसे लकड़ी के सन्दूक बनते हैं मगर यह जल्दी चटक जाया करती है।

Satin (स्यटिन)—साटन। यह खास क़िस्म की बिनावट की सुन्दर व चमकदार रेशमी कपड़ा होता है, और उस पर गोंद की मांड़ दी जाती है। साटन कई नामसे बिकता है जैसी जिस की बिनावट हो। सब से उमदा 'साटन' Lyons नगर की होती है मगर साटन बहुत करके इंगलैंड में तयार की जाती है। घटिया क़िस्म की साटन 'साटिनट' (satinet) कहाती है और जिस साटन से सूत या ऊन मिला रहता है उसे Sateen याने स्वालनट कहते हैं।

Sateen, satinet (स्यटीन, स्यटिनट)—Satin देखो।

Satin wood (स्यटिन उड)—इड्गल, भेरा, बिलगू, जिरहूल। यह पेड़ सेंट्रल इंडिया और सौथ इंडिया में होता है। लकड़ी ज़र्द रंग की होती है। सिलोन से यह लकड़ी बहुत चलान होती है। पालिश करने पर साटन की तरह इस में चमक आ जाती है। आरायशी चीज़ें मिस्ल पिकचर-फ्रेम वग़ैरा के इससे बनाये जाते हैं और इमारत के काम में भी आती है। जलाने में बहुत धूआं देती है। इस पेड़ में एक क़िस्म की गोंद भी निकलती है। लकड़ी से रंग भी निकाला जाता है और तेल भी निकलता है।

Satin spar (स्याटिन स्पार)—एक क़िस्म का संगे जराहत जिसमें रेशे ज्यादा हों।

Savin (स्याविन)—एक क़िस्म के पेड़ (Juniperus sabnia) के फल का तेल है। यह पेड़ इटली और यूनाइटेड स्टेट में होता है। तेल जहरीला होता है इसलिए खाया तो नहीं जाता मगर छाला या फफोला पड़ जाने पर लगाया जाता है।